रजिस्ट्री सं० डी- 222
REGISTERED No. D-222

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 41] नई दिल्ली, शनिवार, अक्तूबर 7, 1972 (आश्विन 15, 1894)
No. 41] NEW DELHI, SATURDAY, OCTOBER 7, 1972 (ASVINA 15, 1894)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

नोटिस
(NOTICE)

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 15 फरवरी 1972 तक प्रकाशित किये गये हैं :—

The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 15th February 1972 :—

अंक Issue No.	संख्या और तिथि No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
1	2	3	4

शून्य
—NIL—

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां प्रकाशन प्रबन्धक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांग-पत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी। मांग-पत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तिथि से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिएं।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on indent to the Manager of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Manager within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	1055
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	1645
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	85
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	1455
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्ट	—
भाग II—खंड 3—उपखंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं।)	2927
भाग II—खंड 3—उपखंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं	3727
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश	555
भाग III—खंड 1—महालेखा परीक्षक, संघ लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के अधीन तथा संलग्न कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	1381
भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिस	289
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं	—
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिसें शामिल हैं	1631
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिसें	197
पूरक संख्या 41—	
30 सितम्बर, 1972 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्ट	1959
9 सितम्बर, 1972 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म तथा बड़ी बीमारियों से हुई मृत्यु सम्बन्धी आंकड़े	1969

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions Issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	1055
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	1645
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence	85
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Officers issued by the Ministry of Defence	1455
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (i)—General Statutory Rules (including orders, bye-laws etc. of general character) issued by the Ministries of the Govtrnment of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories).	2927
PART II—SECTION 3.—SUB.SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories)	3727
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence	555
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	1381
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta	289
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	—
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1631
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies	197
SUPPLEMENT No. 41	
Weekly Epidemiological Reports for week-ending 30th September, 1972	1959
Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week ending 9th September, 1972	1969

भाग I—खण्ड 1

(PART I—SECTION 1)

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 23 सितम्बर

सं० 107-प्रेज०/72—दिनांक 20 अगस्त, 1966 के राजपत्र के भाग 1, खण्ड 1 में पृष्ठ 576 पर प्रकाशित राष्ट्रपति सचिवालय की अधिसूचना सं० 55-प्रेज०/66, दिनांक 15 अगस्त, 1966, में श्री अलगप्पा पिल्ले कट्टलिंगम पिल्ले, पुलिस अधीक्षक, भ्रष्टाचार विरोधी शाखा, केरल, को सराहनीय सेवाओं के लिए प्रदत्त पुलिस पदक को, पुलिस पदक से सम्बन्धित नियमों के नियम 8 के अन्तर्गत रद्द किया जाता है और पदक जब्त किया जाता है।

सं० 108-प्रेज०/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं में उनके असाधारण कर्त्तव्यपरायणता अथवा साहस के उपलक्ष में उनको "वायु सेना मैडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

ग्रुप कैप्टेन कोट्टावाथुकल थामस अब्राहम (3600), फ्लाइंग (पायलट),

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, ग्रुप कैप्टेन कोट्टावाथुकल थामस अब्राहम पश्चिमी क्षेत्र में एक सिगनल यूनिट की कमान कर रहे थे। वे एक वायु रक्षा निदेशन केन्द्र और बहुत सी भू-नियन्त्रण अन्तः रोधन और पूर्व-चेतावनी यूनिटों के नियन्त्रक थे। बहुत से वायु रक्षा तोपखाना ब्रिगेड और जमीन से हवा में मार करने वाले अस्त्रों की स्क्वाड्रनों का कामकाज भी इनके सुपुर्द था। इसके साथ-साथ, वर्तमान प्रणाली में प्रेक्षण चौकियों की श्रृंखला को मिला कर एक पूर्णतः नई प्रणाली भी शामिल की गई थी। सुदृढ़ योजना, कठिन परिश्रम और प्रेरणाप्रद नेतृत्व के सहारे, ग्रुप कैप्टेन अब्राहम ने सभी काम सराहनीय ढंग से पूरे किए। उनकी जमीनी तैयारी ने शत्रु की वायु सेना को कहीं भी सफल प्रहार नहीं करने दिया। जब शत्रु के वायुयानों ने उनकी यूनिट पर आक्रमण करके कुछ उपस्कर को नुकसान पहुंचाया, तो उन्होंने ऐसा प्रबन्ध किया कि यूनिटों ने सराहनीय गति से फिर से अपनी संक्रियाएं शुरू कर दीं और संक्रिया से सम्बन्धित भारी यातायात का काम भी निपटाया।

आद्योपान्त ग्रुप कैप्टन कोट्टावाथुकल थामस अब्राहम ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

2. विंग कमांडर सोमेन्द्र कुमार राय (4032), फ्लाइंग (पायलट),

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, विंग कमांडर सोमेन्द्र कुमार राय एक परिजहन स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे। वे अपनी स्क्वाड्रन के उन वायुयानों की टोली के कमांडर थे जिन्होंने 11 दिसम्बर, 1971 को विमान-वाहिक संक्रिया में भाग लिया था। उन्होंने इस संक्रिया की योजना बनाई और इसका संचालन किया, अडिग साहस से अपनी टोली का नेतृत्व किया, और बड़ी सफलता के साथ विमान-वाहित संक्रिय को पूरा किया।

इस कार्यवाही में, विंग कमांडर सोमेन्द्र कुमार राय ने साहस नेतृत्व और व्यावसायिक कौशल का परिचय दिया।

3. विंग कमांडर जानी विलियम ग्रीन (4093), वीर चक्र फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान विंग कमांडर जानी विलियम ग्रीन लड़ाकू वायुयानों की एक स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे। उन्होंने समाधान हवाई गश्त, स्वीप और अनुरक्षण उड़ानों के रूप में अनेक संक्रियात्मक उड़ानें भरी। 4 दिसम्बर, 1971 को जब वे समाघात हवाई गश्त पर थे, दो पाकिस्तानी एफ०-104 वायुयानों ने एक हवाई अड्डे पर आक्रमण करने की कोशिश की। हालांकि आकाश में वे अकेले थे, उन्होंने आक्रामक कार्यवाही का और शत्रु के वायुयानों पर धावा बोल दिया। शत्रु के वायुयानों ने अपनी टंकियां और गोला बारूद फैंक दिए और पुन दहन को चालू करके, वे वापिस अपने क्षेत्र में भाग गए।

आद्योपान्त विंग कमांडर जानी विलियम ग्रीन ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

4. विंग कमांडर मान सिंह (4094), फ्लाइंग (पायलट),

विंग कमांडर मान सिंह को जून, 1951 में भारतीय वायुसेना की उड़ान शाखा में कमीशन प्रदान किया गया और जून, 1969 से उन्हें पश्चिमी वायु कमान के मुख्यालय के संक्रियात्मक स्टाफ में लगाया गया। उन्होंने पश्चिमी वायु कमान के अधीन आने वाली स्क्वाड्रनों की संक्रियात्मक दक्षता को बढ़ाया। उन्होंने स्क्वाड्रनों की दक्षता को परखने के लिए असंख्य हवाई अभ्यासों का प्रबन्ध किया और उन्हें सफलतापूर्वक करवाया। उन्होंने कमान की संक्रियात्मक योजनाओं की तैयारी में बहुत योगदान दिया और उनकी सलाह हमेशा ही बहुत लाभदायक निकली।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरा, उन्होंने कमान मुख्यालय की योजनाओं की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आद्योपान्त विंग कमांडर मान सिंह ने कार्य-कुशलता और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

5. विंग कमांडर गुरशरण सिंह (4263), बी० एस० एम०
वैमानिकीय इंजीनियरिंग (मकैनिकल)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओ के दौरान, विंग कमांडर गुरशरण सिंह एक संक्रियात्मक विंग में मुख्य तकनीकी अफसर के रूप में कार्य कर रहे थे। उन्होंने अनथक काम करके लड़ाकू और बमबार वायुयानों को बहुत बढ़िया सेवा के योग्य बनाए रखा। अपने आराम की जरा भी चिन्ता किए बिना, और विभिन्न प्रकार की मरम्मत की समस्याओं से घबराए बिना, उन्होंने दिन-रात एक करके शानदार काम किया।

आद्योपान्त विंग कमांडर गुरशरण सिंह ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

6. विंग कमांडर कुमारपालयम रामसुब्रामणियम नटराजन (4270)
वैमानिकीय इंजीनियरिंग (मकैनिकल)

विंग कमांडर कुमारपालयम रामसुब्रामणियम नटराजन को फरवरी, 1952 में भारतीय वायुसेना की वैमानिकीय इंजीनियरिंग (मकैनिकल) शाखा में कमीशन प्रदान किया गया था। जनवरी, 1970 में उन्हें पूर्वी वायु कमान मुख्यालय के वरिष्ठ तकनीकी स्टाफ अफसर के रूप में तैनात किया गया था। फरवरी, 1971 से वे कमान इंजीनियरिंग अफसर के रूप में कार्य कर रहे हैं जिससे सभी वायुयानों और वायुवाहित उपस्कर के अनुरक्षण और साथ के साथ सामान जुटाने का दायित्व उन पर है। कार्य-प्रणाली को सुधारने और सुव्यवस्थित करने की अत्यन्त आवश्यकता थी ताकि वैज्ञानिक ढंग से फालतू कल-पुर्जों का निर्माण करने के लिए कार्यवाही समय-रहते हो। इसके साथ ही, चोटी की कार्यकुशलता के लिए, दूसरी लाइन के सेवाई-प्रबन्ध को भी सुधारने की आवश्यकता थी। उन्होंने विभिन्न संबंधित यूनिटों में तत्कालिकता की और समस्या को समझने की भावना पैदा की और उनके प्रयत्नों के फलस्वरूप दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान हमारे वायुयान बहुत अच्छी स्थिति में बने रहे।

आद्योपान्त विंग कमांडर कुमारपालयम रामसुब्रामणियम नटराजन ने व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

7. विंग कमांडर अनादि शंकर सरकार (4273)
वैमानिकीय इंजीनियरिंग (मकैनिकल)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, विंग कमांडर अनादि शंकर सरकार एक संक्रियात्मक विंग में मुख्य तकनीकी अफसर के रूप में सेवा कर रहे थे। यद्यपि हमारे वायुयानों ने इतनी अधिक उड़ानें भरी कि देख कर आश्चर्य होता है, और शत्रु की गोलाबारी से हमारे वायुयानों को क्षति पहुंची फिर भी उन्होंने अपने आदर्श आचरण से और कार्मिक प्रबन्ध से वायुयानों को बहुत ही अच्छी स्थिति में बनाए रखा। उन्हीं के कारण पांच नाकारा वायुयानों की मरम्मत बड़ी शीघ्रता से हुई। । उनकी देखरेख और निर्देशन में, विशेषज्ञ गाड़ियों को बराबर बहुत ही अच्छी स्थिति में रखा गया जिसके फलस्वरूप वायुयान जल्दी-जल्दी उड़ान भर सके। उन्होंने स्टेशन वर्कशाप को ऐसा उन्नत बनाया कि वहां अनेक प्रकार के कल-पुर्जे आदि बनने लगे जिन्हें पहले वहां बनाना कठिन था।

आद्योपान्त विंग कमांडर अनादि शंकर सरकार ने नेतृत्व, व्यावसायिक ज्ञान और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

8. विंग कमांडर गन्धर्व सेन (4429), ए०वी०एम०एम०
फ्लाइंग (पायलट)

पाकिस्तान के साथ दिसम्बर, 1971 के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, विंग कमांडर गन्धर्व सेन एक मिगनल यूनिट की कमान कर रहे थे। हालांकि शत्रु के वायुयानों ने उनकी यूनिट पर 29 आक्रमण किए, फिर भी उन्होंने एक बार के सिवाय कभी भी काम बन्द नहीं किया। उस एक अवसर पर भी, बिजली की व्यवस्था और उपस्कर क्षति को लगभग आधे घंटे में ठीक कर दिया गया। जब उनकी यूनिट के वायुयान रक्षा निदेश केन्द्र के रूप में अतिरिक्त कार्यभार संभालने को कहा गया तो उन्होंने सामरिक क्षेत्रों में वायु-यान आक्रमणों से प्रतिरक्षा का प्रबन्ध करके आक्रमण पर जाने वाले अपने वायुयानों का बचाव करके और शत्रु के इलाके पर आक्रमक कार्यवाही के लिए "स्वीप" की व्यवस्था करके, मूल्यवान सहायता दी। उन्होंने ऐसे संक्रियात्मक कार्य तो पूरे किये ही जिनका कि यूनिट से सीधा सम्बन्ध था, वायुसेना के बहुत से कार्मिकों को ऐसा प्रशिक्षण देने का कार्य भी पूरा किया जिससे कि वे नीची उड़ानें भर कर शत्रु के बारे में सूचनाएं ला सकें जो संक्रियाओं के दौरान, बहुत लाभप्रद हुईं।

आद्योपान्त विंग कमांडर गन्धर्व सेन ने साहस, व्याव-सायिक कौशल और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

9. विंग कमांडर केशव देव कनागत (4433)
फ्लाइंग (पाइलट)

पाकिस्तान के विरुद्ध दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान विंग कमांडर केशव देव कनागत एक समुद्री टोह स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे। भारतीय नौसेना के साथ मिलकर, इनके स्क्वाड्रन ने समुद्री टोह का, शत्रु को खोजने का, उसकी सूचना देने का और मार्गदर्शन का जो कार्य किया, नौसैनिक संक्रियाओं के लिए वह बहुत महत्वपूर्ण था और पश्चिमी और पूर्वी दोनों क्षेत्रों में नौसैनिक संक्रियाओं की सफलता में उसका बड़ा हाथ था. उन्होंने स्वयं सर्वाधिक उड़ानें भरीं और भारी खतरों के काम अपने हाथ में लिए, और अपने वायुकर्मियों के लिए वे उत्साह और साहस का स्रोत रहे। स्क्वाड्रन को जितने भी समुद्री संक्रियात्मक कार्य सौंपे गये, स्क्वाड्रन ने उन सबको सफलता से पूरा किया जिसका श्रेय बहुत कुछ उन्हीं को जाता है।

आद्योपान्त विंग कमांडर केशव देव कनागत ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

10. विंग कमांडर जगजीत सिंह साहनी (4449)
फ्लाइंग (पाइलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, विंग कमांडर जगजीत सिंह साहनी, एक परिवहन स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे। यद्यपि उनके स्क्वाड्रन को तीन स्थानों में तैनात किया गया फिर भी उन्होंने अधिकतम कार्य-निष्पादन के लिए इन सभी दस्तों से लगातार सम्पर्क बनाए रखा। उन्होंने बंगलादेश के ऊपर वायुवाहित संक्रियाओं में अपने स्क्वाड्रन का नेतृत्व किया और एक इन्फैन्ट्री ब्रिगेड को वायुयानों से दूसरी जगह पहुंचाने में भी भाग लिया।

आद्योपान्त विंग कमांडर जगजीत सिंह साहनी ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

11. विंग कमांडर राजाराम जयराम अम्बेगांवकर (4622)
फ्लाइंग (पाइलट)

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, विंग कमांडर राजाराम जयराम अम्बेगांवकर एक परिवहन स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे जो पूर्वी क्षेत्र में तैनात था। उन्होंने अपने स्क्वाड्रन की कार्य-क्षमता को बढ़ाया और वायुकर्मियों तथा भू-कर्मियों की संक्रियात्मक कार्य-कुशलता को निखारा। उन्होंने अपने वायुयानों को सेवा योग्य बनाये रखने के लिए रात-दिन वायुयानों की देखभाल का प्रबन्ध जारी रखा। उन्होंने 11 दिसम्बर, 1971 को बंगलादेश के ऊपर वायुवाहित संक्रियायों में वायुयानों की एक टोली का नेतृत्व किया और यद्यपि उनके वायुयान का एक रोधक पट्टा खुल गया था जिसके कारण उनके सामान का कुछ भाग रास्ते में ही गिर गया, फिर भी उन्होंने वायुयान पर नियन्त्रण बनाए रखा और उड़ान को पूरा किया।

आद्योपान्त विंग कमांडर राजाराम जयराम अम्बेगांवकर ने साहस, नेतृत्व, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

12. विंग कमांडर करम सिंह (5132) ए०वी०एस०एम०
वैमानिकीय इंजीनियरिंग (मकैनिकल)

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, विंग कमांडर करम सिंह एक बेस मरम्मत डिपो के वायुयान सर्विसिंग प्रभाग के प्रभारी थे। उन्होंने बहुत बड़ी संख्या में वायुयानों की बड़ी मरम्मत करवाई और कैमरा-सुधार करवाए। उन्होंने अपने अमले के लोगों को दिन-रात काम करने के लिए प्रोत्साहित किया और स्क्वाड्रनों के संक्रियात्मक प्रयोग के लिए, सबसे कम समय में अधिकतम संख्या में वायुयान तैयार कराए।

आद्योपान्त विंग कमांडर करम सिंह ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

13. स्क्वाड्रन लीडर थित्तनीमुत्तम कृष्णास्वामी शेषाचारी (4954)
वेमानिकीय इंजीनियरिंग (मकैनिकल)

स्क्वाड्रन लीडर थित्तनीमुत्तम कृष्णास्वामी शेषाचारी को अप्रैल 1955 में भारतीय वायुसेना की वैमानिकीय इंजीनियरिंग (मकैनिकल) शाखा में कमीशन प्रदान किया गया था। दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, स्क्वाड्रन लीडर थित्तनीमुत्तम कृष्णास्वामी शेषाचारी एक संक्रियात्मक विंग के वरिष्ठ आयुध अफसर पद पर कार्य कर रहे थे। उन्होंने अपने सामान्य कार्यभार के अतिरिक्त स्क्वाड्रन आयुध का कार्यभार भी अपने हाथ में लिया। इस बात का श्रेय मुख्यतः उन्हीं को है कि स्क्वाड्रन संक्रियात्मक उड़ानों में अत्यधिक सफलता प्राप्त कर सका। उन्होंने वायुयान को अगली उड़ान के लिए तैयार करने के समय को काफी हद तक कम कर दिया और अपने बुद्धिमत्तापूर्ण विश्लेषण द्वारा वायुयान के साथ बम लटके रह जाने की सम्भावना को वस्तुतः समाप्त कर दिया। उन्होंने आयुधों के सुधार में और वायुयान से विशेष भंडारों को ढोने और आकाश से छोड़ने के परीक्षणों में महत्वपूर्ण योगदान दिया और इस प्रकार बमवर्षक वायुयानों की संक्रियात्मक क्षमता को काफी हद तक सुधारा।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर थित्तनीमुत्तम कृष्णास्वामी शेषाचारी ने व्यावसायिक कौशल, संगठन-क्षमता और कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

14. स्क्वाड्रन लीडर सतवन्त सिंह (5010)
फ्लाइंग (पाइलट)

स्क्वाड्रन लीडर सतवन्त सिंह लगभग पांच वर्ष से एक लड़ाकू स्क्वाड्रन के वरिष्ठ फ्लाइट कमांडर हैं। इस पूरी अवधि के दौरान, उन्होंने अपनी सुख-सुविधा का ध्यान रखे बिना निष्ठा से कार्य किया और पायलटों को प्रशिक्षण दिया ताकि स्क्वाड्रन संक्रिया के लिए तैयार मिले। दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियायों के दौरान, उन्होंने 20 लड़ाकू हवाई गश्तों स्वीप मिशनों और अनुरक्षी उड़ान का नेतृत्व करके अपने पायलटों के लिए आदर्श स्थापित किया जिससे उन्होंने जी जान से हवाई अड्डे की रक्षा की।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर सतवन्त सिंह ने व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

15. स्क्वाड्रन लीडर अमृत मोहन मेहता (5051)
फ्लाइंग (पाइलट)

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर अमृत मोहन मेहता एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन के फ्लाइट कमांडर थे। 4 दिसम्बर 1971 को उन्हें शत्रु के एक हवाई अड्डे की फोटो टोह के लिए भेजा गया। अपना काम पूरा करके, जब वापस लौटने ही लगे थे कि शत्रु के दो सेवर जेटों ने इन्हें रोक लिया, किन्तु इन्होंने

अपना सारा फालतू सामान फेंक दिया और अपने वायुयान का इस चतुराई से परिचालन किया कि शत्रु के वायुयानों के हमले से साफ बच निकले । कुछ ही देर बाद, जब वे अपने अड्डे को वापस आ रहे थे, तो शत्रु के दो मिराजों ने फिर इनका पीछा किया, किन्तु इस बार भी अपने वायुयान का चतुराई से परिचालन करके, वे उनके घिराव से बच निकले । अड्डे से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर, उनके वायुयान का ईंधन खत्म हो गया और इंजन बंद हो गया । फिर भी, बड़ी चतुराई से, स्टिक लैंडिंग के सहारे, वे वायुयान को उतार लाए और इस प्रकार, एक मूल्यवान वायुयान बचा लिया । उनके लाए फोटुओं से शत्रु के हवाई अड्डे के बारे में बहुत ही मूल्यवान सूचनाएं मिलीं, जो आगे की योजना के लिए अत्यधिक महत्व की थीं । इसके अतिरिक्त, उन्होंने शत्रु क्षेत्रों पर हमला करने, उसकी संचार लाइनों की तोड़-फोड़ और अपनी सेनाओं को निकट से हवाई सहायता देने के कई मिशनों का नेतृत्व किया ।

आद्योपान्त लीडर अमृत मोहन मेहता ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

16. स्क्वाड्रन लीडर नरिन्दर सिंह विरदी (5116)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में, पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, स्क्वाड्रन लीडर नरिन्दर सिंह विरदी एक लड़ाकू स्क्वाड्रन में वरिष्ठ पायलट के रूप में कार्य कर रहे थे । 8 दिसम्बर, 1971 को वे काफी नीची स्वीप-उड़ान पर गए चार वायुयानों की एक फार्मेशन में नम्बर 3 के रूप में। काम पूरा करने के बाद जब उनकी फार्मेशन अड्डे को लौट रही थी तो उनका वायुयान 3 बड़े-बड़े पक्षियों के झुंड से टकरा गया और इंजन सहित वायुयान को भारी क्षति पहुंची । हवारोक-शीशे के टुकड़े-टुकड़े हो गए, कनोपी टूट गई, उनका रेडियो/टेलीफोन सम्पर्क कट गया और वे काकपिट के एक ही तरफ देख पा रहे थे । इंजन लगातार कमजोर पड़ता जा रहा था और दूर तक देख पाना भी कठिन था । इन सबके बावजूद उन्होंने अपना अड्डा ढूंढ निकाला और सही सलामत वहां उतर गए । इस प्रकार उन्होंने एक मूल्यवान वायुयान बचा लिया ।

इस कार्यवाही में स्क्वाड्रन लीडर नरिन्दर सिंह विरदी ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

17. स्क्वाड्रन लीडर तहमूरास्प रतनशा पटेल (5192)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर तहमूरास्प रतनशा पटेल पूर्वी क्षेत्र में एक संक्रियात्मक स्क्वाड्रन में कार्य कर रहे थे । 4 दिसम्बर 1971 को ढाका हवाई अड्डे पर हमले के लिए भेजे गए एक मिशन में वे नम्बर तीन थे । उड़ान के शुरू में उन्हें अपने वायुयान के अवचक्र को ऊपर उठाने में काफी कठिनाई हुई, और जब वे उससे ऊपर उठा सके तो वे अपनी फार्मेशन से अलग पड़ चुके थे । अकेले केवल अपनी सूझ-बूझ के सहारे उन्होंने एक मालगाड़ी पर आक्रमण किया और उसे भारी नुकसान पहुंचाया । साथ ही अड्डे पर लौटने से पहले उन्होंने शत्रु के अनेक ठिकानों पर गोलाबारी की । अगले ही दिन वे फिर नई प्रहार उड़ानों पर गए । 11 दिसम्बर 1971 को, स्क्वाड्रन लीडर पटेल एक और पायलट के साथ रंगपुर क्षेत्र में शत्रु के बंकरों पर हमला करने गए । बंकरों को ध्वस्त करके जब वे वायुयान को ऊपर ला रहे थे तो उस पर जमीन से गोला आकर लगा । दोनों पायलटों को गहरी चोटें लगीं । स्क्वाड्रन लीडर पटेल की आंखों के पास गोलों की किरचें लगीं, जिससे उन्हें सख्त दर्द हुआ और रक्त बहने लगा । घावों के बावजूद वे वायुयान को वापिस अड्डे पर ले आए ।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर तहमूरास्प रतनशा पटेल ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

18. स्क्वाड्रन लीडर उज्जल सिंह प्रूथी (5488)
मेडिकल

पाकिस्तान के विरुद्ध दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान, स्क्वाड्रन लीडर उज्जल सिंह प्रूथी पूर्वी क्षेत्र के एक वायुसेना अस्पताल में शल्यक्रिया विशेषज्ञ के रूप में कार्य कर रहे थे । उनकी दूरदर्शिता और उपायों से ही हस्पताल में जितना भी काम आया, वह सब पूरा किया जा सका । अपनी कार्य-कुशलता और प्रशासनिक योग्यता के बल पर, उन्होंने हस्पताल को अद्वितीय कार्यक्षमता प्रदान की । जिस समय युद्ध क्षेत्र से आने वाले हताहतों का तांता बंधना शुरू हुआ तो वे अकेले ही लंबे समय तक आपरेशन करते रहे । एक बार तो उन्होंने 48 घंटों के अन्दर 41 हताहतों की देखभाल और उनके आपत्कालीन आपरेशन किए । एक दूसरे अवसर पर, जबकि 22 हताहतों को लाया गया तो उन्होंने आपरेशन-कक्ष में लगातार 36 घंटे तक काम किया । दस दिन की अवधि में हस्पताल में युद्ध-क्षेत्र से आने वाले 148 घायलों की चिकित्सा की । तुरन्त देखभाल के कारण सब के सब घायल बच गए और कोई भी प्राण-हानि नहीं हुई ।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर उज्जवल सिंह प्रूथी ने व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

19. स्क्वाड्रन लीडर शैलेश कुमार (5520)
प्रशासन

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर शैलेश कुमार एक सिगनल यूनिट में अनुभाग संक्रिया अफसर के रूप में कार्य कर रहे थे । उन्होंने नई और मौलिक सूझ-बूझ के कारण द्वारा नई-नई प्रशिक्षण योजनाओं को आरम्भ किया जिनके वायु रक्षा प्रणाली

में बहुत सुधार हुआ । युद्ध के दौरान जिस प्रकार भांति-भांति की, अनेक संक्रियात्मक यूनिटों को काम पर लगाना पड़ा, उसके लिए बड़ी बुद्धिमत्ता से योजना बनाने और पूरी सतर्कता से समन्वय करने की आवश्यकता थी। उन्होंने यह काम प्रशंसनीय दक्षता से किया । इसके अतिरिक्त वे सदा इसके लिए भी यत्नशील रहे कि हमारे सभी हमलावर वायुयान सुरक्षित वापस लौटें और शीघ्र से शीघ्र फिर उड़ान के योग्य बन सकें । । उनके ही यत्नों से संकट की अवस्थाओं में भी हमारे अनेक वायुयान सुरक्षित रह सके । उन्होंने कई बार हमारे लड़ाकू वायुयानों द्वारा शत्रु के वायुयानों को बीच रास्ते में ही रोकने की कार्यवाहियों का भी कुशलता से निदेशन किया ।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर शैलेश कुमार ने नेतृत्व, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

20. स्क्वाड्रन लीडर कृष्णस्वामी चन्द्र शेखर (5670)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर कृष्णास्वामी चन्द्र शेखर एक लड़ाकू स्क्वाड्रन के फ्लाइट कमांडर थे । उन्होंने सूझबूझ से योजना तैयार करके यह सुनिश्चित किया कि उनके स्क्वाड्रन के सभी पायलट संक्रियात्मक उड़ानों के लिए दिन-रात बराबर तैयार रहें । उन्होंने शत्रु के इलाके में निरस्त्र विमान में बहुत अन्दर तक अच्छी तरह सुरक्षित क्षेत्रों में फोटो लेने के लिए यह उड़ाने भरीं ।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर कृष्णस्वामी चन्द्र शेखर ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

21. स्क्वाड्रन लीडर बिल्लोर सत्यनारायण राजू (5724)
प्रशासनिक

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, स्क्वाड्रन लीडर बिल्लोर सत्यनारायण राजू एक संक्रियात्मक स्क्वाड्रन के फोटो अनुभाग के प्रभारी अफसर थे । उनकी निजी देख-रेख में, फोटो अनुभाग ने महत्वपूर्ण टोह उड़ानों के 50,000 से भी अधिक बहुत बढ़िया चित्र तैयार किए । दिसम्बर 13 दिसम्बर, 1971 को वायुयान से ढाका शहर के सभी प्रवेश-मार्गों के चित्र लिए गए और अगली सुबह ही इन चित्रों के 6200 प्रिंट और 20 आवर्धित प्रतियां तैयार करके दे दी गई । इन चित्रों से एकत्र सूचना हमारी थल सेना द्वारा अपनी कार्यवाहियों की योजना बनाने के लिए बहुत महत्व की रहीं ।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर बिल्लोर सत्यनारायण राजू ने नेतृत्व, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

22. स्क्वाड्रन लीडर अजय कुमार ब्रह्मवार (5858)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर अजय कुमार ब्रह्मवार एक लड़ाकू स्क्वाड्रन में तैनात थे । अपनी स्क्वाड्रन को संक्रिया के लिए तैयार-बर-तैयार करने का श्रेय उन्हीं को है । उन्होंने सामाघात हवाई गश्त, अनुरक्षण और अन्तरोधन के लिए 26 संक्रियात्मक उड़ाने भरीं । उनके व्यक्तिगत उदाहरण से ही प्रेरणा प्राप्त करके, उनके स्क्वाड्रन ने, मौसम की परवाह किए बिना, घोर अंधेरी रातों में और पहाड़ी इलाकों के आसपास कम ऊंचाई पर, बिना किसी दुर्घटना के, हर रोज 55 से 60 उड़ानें भरीं ।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर अजय कुमार ब्रह्मवार ने साहस, व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

23. स्क्वाड्रन लीडर बलजीत सिंह सैनी (6011)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर बलजीत सिंह सैनी हमारे एक हवाई अड्डे पर प्रशासनिक ड्यूटी पर तैनात थे । 3 दिसम्बर, 1971 को, शत्रु के हवाई हमले से हवाई अड्डे को क्षति पहुंचने पर, उन्होंने सबसे कम समय में दौड़-पथ की मरम्मत करवाई । बाद में भी शत्रु ने इस हवाई अड्डे पर कई हमले किए परन्तु उन्होंने हमेशा मजदूरों के साथ रह कर कम से कम समय में दौड़-पथ की मरम्मत करवाई ।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर बलजीत सिंह सैनी ने साहस, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

24. स्क्वाड्रन लीडर सहाय संजीव (6139)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, स्क्वाड्रन लीडर सहाय संजीव एक लड़ाकू स्क्वाड्रन में एक वरिष्ठ पायलट के रूप में कार्य कर रहे थे । उन्होंने खराब मौसम के बावजूद घोर अंधेरी रातों में समाघात हवाई गश्त, अनुरक्षण एवं अन्तरोधन के लिए पहाड़ी इलाकों में 26 संक्रियात्मक नीची उड़ाने भरी । अनुरक्षण उड़ानों के दौरान, उन्होंने हमेशा इस बात का ध्यान रखा कि शत्रु के वायुयानों से हमारे प्रहारक वायुयानों पर कोई आंच न आने पाए । एक बार जब वे चार वायुयानों की अनुरक्षण उड़ान का नेतृत्व कर रहे थे तो उन्होंने देखा कि शत्रु के दो मिराज वायुयान अचूक ढंग से उनकी फार्मेशन की ओर आ रहे हैं । उन्होंने तुरन्त अपने नं० 2 को पैंतरा बदलने का आदेश दिया और अपने वायुयान को इस तरह घुमाया कि एक ही मोड़ में स्वयं शत्रु के पीछे हो लिए जिससे वह चकरा गया और जमीन की तरफ गोता लगा कर भाग खड़ा हुआ । शत्रु का पीछा करने के बजाय अपने प्रहारक वायुयानों के साथ रहे ताकि प्रहारी टोली रक्षित रहे ।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर सहाय संजीव ने साहस, नेतृत्व और व्यावसायिक कौशल का परिचय दिया ।

25. स्क्वाड्रन लीडर जतेन्द्र कुमार धवन (6279)
वैमानिकीय इंजीनियरिंग (मकेनिकल)

पाकिस्तान के विरुद्ध दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर जतेन्द्र कुमार धवन एक संक्रियात्मक विंग में वरिष्ठ आयुध अधिकारी के रूप में कार्य कर रहे थे । इस विंग को एकाएक में भारी बमबारी का काम सौंपा गया । स्क्वाड्रन लीडर जतेन्द्र कुमार धवन पर यह दायित्व था कि वे हथियार आदि प्राप्त करें और आक्रमणों के लिए वायुयानों में रखवाएं । उन पर दूसरा दायित्व यह था कि वे वायुयानों को समय से तैयार करें जिससे 3 दिसम्बर, 1971 के पाकिस्तानी आक्रमण का प्रत्युत्तर दिया जा सके । अपने सुख-सुविधा की जरा भी परवाह किए बिना, उन्होंने चौबीसों घंटे काम किया और सौंपे गए सभी काम पूरे किए ।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर जतेन्द्र कुमार धवन व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

26. स्क्वाड्रन लीडर दिनकर शांताराम जतार (6521)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, स्क्वाड्रन लीडर दिनकर शांताराम जतार एक बममार स्क्वाड्रन में तैनात थे । उन्होंने शत्रु के इलाके में बहुत अन्दर तक, भारी जमीनी गोलाबारी और हवाई विरोध के बावजूद, बहुत सी संक्रियात्मक उड़ानें भरीं । 4 दिसम्बर, 1971 को, जब उनके नम्बर दो के वायुयान को शत्रु के इलाके में काफी अन्दर विमान-भेदी तोपों का एक गोला लगा और वह छतरी से वहां कूदा, तो वे अपनी सुरक्षा की तनिक भी चिन्ता न करते हुए तब तक उसी इलाके में रहे जब तक कि उन्हें यह निश्चय नहीं हो गया कि उनका साथी सुरक्षित उतर गया है । 9 दिसम्बर, 1971 को, जब वे शत्रु के इलाके में 100 समुद्री मील से भी अधिक अन्दर के एक हवाई अड्डे पर आक्रमण कर रहे थे तो उनके वायुयान में इंधन कम पड़ गया परन्तु वे टस से मस न हुए और उन्होंने दो हमले किए और नाममात्र के इंधन से अपने वायुयान को अड्डे पर लौटा लाए । 10 दिसम्बर, 1971 को एक निकट सहायता उड़ान के दौरान, शत्रु की जमीनी गोलाबारी से उनके वायुयान का बायां इंजन तहस नहस हो गया । इस के बावजूद भी उन्होंने अपना काम पूरा किया और अपने अड्डे पर सुरक्षित लौट आए ।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर दिनकर शांताराम जतार ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

27. मेजर कुलदीप सिंह साहनी (आई सी०-13279)
वायु प्रेक्षण चौकी पायलट

मेजर कुलदीप सिंह साहनी 1969 से अग्रिम क्षेत्र में एक वायु प्रेक्षण चौकी फ्लाइट की कमान करते रहे हैं । अपने सेवा काल के दौरान उन्होंने दुर्घटना रहित 640 घंटे की उड़ाने की । दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान उनकी फ्लाइट के सारे पायलट हाल ही में तैनात होकर आए थे और संक्रियात्मक ड्यूटियों के लिए प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे । इसके अतिरिक्त उनकी फ्लाइट को वायु प्रेक्षण चौकी के कार्य के लिए, बिना किसी परिवर्तन के नई किस्म के वायुयान दिए गए थे । इस फ्लाइट को सेक्शनों में बांट कर डिवीजनों के साथ संलग्न किया जाना था । थोड़े से अर्से में इन पायलटों को प्रशिक्षित करने और वायुयानों को संक्रियात्मक कार्यों के लिए तैयार करने के कठिन कार्य के साथ-साथ मेजर कुलदीप सिंह साहनी को अलग-अलग जगहों पर अपनी फ्लाइट के सभी सेक्शनों पर प्रभावी नियंत्रण भी रखना था । उन्होंने इन सभी कार्यों को एक बड़ी कुशलता से पूरा किया । शत्रु की हवाई और जमीनी गोलाबारी के खतरे के बावजूद उन्होंने छम्ब और सियालकोट क्षेत्रों में स्वयं 40 संक्रियात्मक उड़ानें कीं ।

आद्योपान्त मेजर कुलदीप सिंह साहनी ने साहस, नेतृत्व, कर्तव्यनिष्ठा और व्यावसायिक कौशल का परिचय दिया ।

28. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रशांत सत्यदेव दीक्षित (7487)
फ्लाइंग (नेवीगेटर)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रशांत सत्यदेव दीक्षित एक बममार स्क्वाड्रन में तैनात थे । उन्होंने चटगांव, कोक्स बाजार, सिलहट और ढाका जैसे महत्वपूर्ण लक्ष्यों पर कई संक्रियात्मक टोह उड़ाने भरीं । 4 दिसम्बर, 1971 को उन्होंने सरगोधा पर रात की उड़ान के के लिए स्वेच्छा से अपनी सेवाएं अर्पित कीं और उसे सफलतापूर्वक पूरा किया ।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रशांत सत्यदेव दीक्षित ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

29. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट हरजीत सिंह बेदी (7603)
फ्लाइंग (पायलट)

पाकिस्तान के विरुद्ध दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट हरजीत सिंह बेदी ने टोह के लिए, आपत्कालीन रसद पहुंचाने के लिए और हताहतों को बाहर निकाल लाने के लिए 26 संक्रियात्मक उड़ानें भरीं । ये उड़ाने उन्होंने राजस्थान क्षेत्र के एक अग्रिम हवाई अड्डे से भरीं और ऐसे समय भरीं जबकि शत्रु के वायुयान इन क्षेत्रों में बम बरसा रहे थे और और गोलियों की बौछार कर रहे थे । 14 दिसम्बर, 1971 को जब वे अग्रिम क्षेत्र के एक हैलिपेड पर, हताहतों को बाहर लाने के लिए, उतरने वाले थे, तो शत्रु के 4 वायुयानों ने पास के इलाके पर आक्रमण किया । इन आक्रमणों के बावजूद, उन्होंने अपने हेलिकाप्टर को इस तरह उतारा कि शत्रु के वायुयान उसे नहीं देख पाएं । इस प्रकार, उन्होंने हेलिकाप्टर को बचाया भर ही नहीं, बल्कि उसमें बैठे रहे और उसे उड़ाकर अड्डे पर वापिस भी लाए

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट हरजीत सिंह बेदी ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

30. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट मानिक बोमनथा मैडन (7681)
फ्लाइंग (पायलट)

पाकिस्तान के विरुद्ध दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट मानिक बोमनथा मैडन ने एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन के वरिष्ठ पायलट के नाते, खेमकरण क्षेत्र में शत्रु के तोप-मोर्चों और सैनिक जमावों पर अनेक हवाई हमले किए । 10 दिसम्बर 1971 को, उन्हें इच्छोगिल नहर के किनारे-किनारे राकेट बरसाने और वायुयान की अगली गन से गोलाबारी करने का काम सौंपा गया । उन्होंने शत्रु के खाईयों में छिपे मोर्चों का पता लगाया और भारी जमीनी गोलाबारी के बावजूद उन पर चार हमले किये । इन हमलों में उनके वायुयान के पंख पर गोला लगा, जिससे उसमें से पैट्रोल रिसने लगा गया और वायुयान पर नियंत्रण रखना भी कठिन हो गया । फिर भी वे क्षतिग्रस्त वायुयान को अड्डे पर वापिस ले आए ।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट मानिक बोमनथा मैडन ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

31. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट सुरिंदर कुमार मिल्लू (7688)
फ्लाइंग (पायलट)

पाकिस्तान के विरुद्ध दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट सुरिन्दर मिल्लू को, जो कि लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन के वरिष्ठ पायलट थे, शत्रु-विमानों को बीच में ही रोकने के कार्य का नेतृत्व सौंपा गया । उन्होंने देखा कि रायविंड पर शत्रु ने भारी मोर्चेबन्दी कर रखी थी । उस लक्ष्य पर आक्रमण करने के

दौरान, उनके वायुयान को शत्रु की जमीनी तोपों का गोला लगा। उनके वायुयान का रडार जाम हो गया और कुछ दाएं को सरक कर उड़ गया और हाईड्रोलिक प्रणाली को भारी क्षति पहुंची। इसके अतिरिक्त, वायुयान के धड़ के पिछले भाग में दो फुट लम्बी दरार आ गई थी और वह बुरी तरह से मुड़ तुड़ गया। यद्यपि पूरा नियंत्रण उनके हाथ में नहीं रहा था, फिर भी उतरने की उचित व्यवस्था के लिए आपात प्रणाली का सहारा लेकर वे दक्षता से वायुयान को अपने अड्डे पर वापिस ले आए और इस प्रकार एक मूल्यवान वायुयान बच गया।

इस कार्यवाही में, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट सुरिन्दर कुमार मित्तू ने साहस और व्यावसायिक कौशल का परिचय दिया।

32. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट जगदीश भट्टाचार्य (7739)
फ्लाइंग (पायलट)

पाकिस्तान के विरुद्ध दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट जगदीश भट्टाचार्य ने एक लड़ाकू बमवार स्क्वाड्रन में पायलट के नाते अनेक संक्रियात्मक उड़ानें भरीं। 6 दिसम्बर, 1971 को जब वे मुनब्बर नदी के निकट शत्रु पर आक्रमण कर रहे थे तो शत्रु की जमीनी गोलाबारी से उनके वायुयान को भारी क्षति पहुंची। वायुयान को नियंत्रण से बाहर होता देख वे शत्रु के ही क्षेत्र में वायुयान से कूद पड़े। शत्रु ने उन्हें पकड़ने के लिए एक टुकड़ी भेजी परन्तु रीढ़ की हड्डी में लगी चोट के बावजूद वे शत्रु को छका कर साफ बच निकले।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट जगदीश भट्टाचार्य ने साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

33. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विजय अरोड़ा (7934)
वैमानिकीय इंजीनियरिंग (इलैक्ट्रानिक्स)।

पाकिस्तान के विरुद्ध दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विजय अरोड़ा पश्चिमी क्षेत्र में एक संक्रियात्मक स्क्वाड्रन में काम कर रहे थे। 3 और 4 दिसम्बर, 1971 को चंगा-मंगा और 5 दिसम्बर, 1971 को हाजीपीर दर्रे पर बममारी करने वाले मिशन के क्रमियों में वे भी शामिल थे। हाजीपीर दर्रे पर हमले के दौरान उनके वायुयान की बम गिराने की प्रणाली में एक भारी खराबी हो गई। उन्होंने अपनी जान हथेली पर रख कर और सुरक्षा-पेटी बांधे बिना ही वायुयान का कार्गी-दरवाजा खोल डाला और उस खराबी को ठीक कर दिया।

इन कार्यवाहियों में, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विजय अरोड़ा ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

34. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट पालमदे सुन्दरम सुब्रामणियम (7974)
वैमानिकीय इंजीनियरिंग (मैकैनिकल)

पाकिस्तान के विरुद्ध दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट पालमदे सुन्दरम सुब्रामणियम एक संक्रियात्मक स्क्वाड्रन में इंजीनियरिंग अफसर के रूप में कार्य कर रहे थे। उन्होंने अपने स्क्वाड्रन के मरम्मत और सर्विसिंग अनुभाग को सुधार कर पूरी तरह से काम निभाने योग्य बनाया। संक्रियाओं के दौरान, वे निरन्तर काम में लगे रहे और अधिक से अधिक वायुयानों को सेवा योग्य बनाए रखा। और इस प्रकार उन्होंने अपने स्क्वाड्रन पर की संक्रियात्मक कुशलता और सफलता में भारी योगदान दिया।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट पालमदे सुन्दरम सुब्रामणियम ने व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

35. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रदीप कांतिलाल गांधी (8142)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रदीप कांतिलाल गांधी एक लड़ाकू स्क्वाड्रन काम कर रहे थे। उन्होंने 11 उड़ानें आक्रामक हवाई सहायता मिशनों, 6 उड़ानें जवाबी हवाई हमलों और 3 उड़ानें हवाई बचाव मिशनों के लिए भरीं। इनमें से 9 मिशनों के तो वे स्वयं नेता भी थे। आक्रामक सहायता मिशनों की चार उड़ानें उन्होंने जमालपुर के ब्रिगेड हेडक्वार्टर पर भरी, जिनमें से दो के वे नेता थे। उन्होंने शत्रु की थलसेना के लालमाई के मोर्चों पर बमबारी करके उसके चार बंकर नष्ट कर दिए। जवाबी हवाई हमलों के लिए उन्होंने 3 उड़ानें दिन में और 2 उड़ानें रात के समय की तथा तजगांव और कुर्मीटोला के हवाई अड्डों पर बमबारी की, हालांकि शत्रु की भारी विमान-भेदी तोपें इन दोनों अड्डों की रक्षा कर रही थी। जिस प्रकार के लड़ाकू वायुयान में वह उड़ान भर रहे थे, उसमें रात के समय बमबारी के लिए उड़ान भरने वाले वे पहले व्यक्ति थे। उन्होंने ढाका में शत्रु सेना के जमाव पर दो आक्रमण किये और भारी जमीनी गोलाबारी के बावजूद, लक्ष्य को ध्वस्त कर दिया।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रदीप कांतिलाल गांधी ने साहस, नेतृत्व, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

36. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट सुब्बियाह बालसुन्दरम (8274)
वैमानिकीय इंजीनियरिंग (मकैनिकल)

दिसम्बर, 1971 में पकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट सुब्बियाह बालसुन्दरम ने पश्चिमी क्षेत्र में बमबारी के लिए अनेक उड़ानें की। 4 दिसम्बर, 1971 को, जब वे छंगा-मंगा के ऊपर काफी नीचाई से बमबारी करने जा रहे थे, तो बम-वाहक की अंतिम रस्सी नहीं खुली। उन्होंने अकेले ही इस अंतिम रस्सी के जैक को खोला और लक्ष्य पर बम गिरा दिए। 14 दिसम्बर, 1971 को भी जब वे रोहड़ी के मार्शलिंगयार्ड पर बमबारी करने गए तो ऐन बम गिराने के मौके पर, बम रिलीज युनिटें बेकार हो गई, न तो बिजली से चलीं, न हाथ से। उस समय उनके वायुयान पर जमीन से भारी गोलाबारी हो रही थी। फिर भी उन्होंने रिलीज-कलपुर्जों के जैक खोलने और लक्ष्य पर बम गिरा ही दिए। 17 दिसम्बर, 1971 को, जब वे बहुत ऊंचाई पर के एक हवाई अड्डे पर बमबारी करने गए तो बम खोलने के केबलों में से एक खराब हो गया। हालांकि आक्सीजन की जो बोतल वे अपने साथ ले गए थे, खाली हो चुकी थी, फिर भी आपाती कुल्हाड़ी से उन्होंने केबल काट-डाला और बम गिरा दिए।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट सुब्बियाह बालसुन्दरम ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

37. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट चरण सिंह ढिल्लों (8376)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट चरण सिंह ढिल्लों एक लड़ाकू बमवार स्क्वाड्रन के वरिष्ठ पायलटों में से एक थ। 4 दिसम्बर, 1971 को वे शत्रु के इलाके में काफी भीतर स्थित एक हवाई-अड्डे पर दिन में हमला करने गए और हवाई मुठभेड़ तथा भारी जमीनी गोलाबारी के

बावजूद, उन्होंने एक तेल-भंडार और गोलाबारूद के एक ढेर को नष्ट कर दिया। लौटते समय उन्हें शत्रु के एक वायुयान ने फिर मुठभेड़ में उलझा दिया। उस समय उनके विमान का ईंधन समाप्त होने वाला था, फिर भी वे अपने वायुयान को भिड़न्त से सफलतापूर्वक बचा गए। बाद में जब वे अपने अड्डे से लगभग 10 मील की दूरी पर थे तो उनका इंजन बन्द हो गया। फिर भी वे अड्डे पर विशेष-अवतरण करने में सफल हो गए और इस प्रकार, एक मूल्यवान वायुयान बचा लिया।

इस कार्यवाही में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट चरण सिंह ढिल्लों ने साहस और व्यावसायिक कौशल का परिचय दिया।

38. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट श्रीधर माधव घटाटे (8665) फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट श्रीधर माधव घटाटे ने लड़ाकू बमवर्षक स्क्वाड्रन के वरिष्ठ पायलट के रूप में 12 संक्रिया उड़ानें भरीं और शत्रु के 2 टैंकों और बहुत सी मोटरगाड़ियों को नष्ट किया। दो मौकों पर, जबकि उनका वायुयान जमीनी गोलाबारी का शिकार हो गया था, वे अपने वायुयान को, ईंधन लगभग समाप्त हो जाने पर भी वापिस अपने अड्डे पर ले आए। इस प्रकार उन्होंने दो संक्रिया वायुयानों को बचाया। उन्होंने भारी जमीनी गोलाबारी के बावजूद अपनी जान की तनिक भी चिन्ता न करते हुए शत्रु के ठिकानों पर आक्रमण किये, और अपने साहसी कार्यों से अन्य पायलटों के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट श्रीधर माधव घटाटे ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

39. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट नयनतारा कुन्जन पिल्लई राघव मेनन (8766) फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट नयनतारा कुन्जन पिल्लई राघव मेनन एक लड़ाकू बमवर्षक स्क्वाड्रन में काम कर रहे थे। भारी जमीनी और हवाई गोलाबारी के बावजूद उन्होंने बहुत सी संक्रियात्मक उड़ानें शत्रु के क्षेत्र में बहुत भीतर तक भरीं। 16 दिसम्बर, 1971 को जब वे बमबारी और गोलीबारी के मिशन पर थे, तब उनके वायुयान को विमान-भेदी गोलाबारी से क्षति पहुंची। गोले से वायुयान का वितान चकनाचूर हो गया और गोले की किरचें उनके अपने शरीर में भी जा धंसी। इससे वे बुरी तरह जख्मी हो गए और उन्हें दिखाई भी कम देने लगा। हालांकि वे अपने अड्डे से 70 समुद्री मील से भी अधिक दूरी पर थे, फिर भी वे वायुयान को छोड़ने के बजाए, वापिस अपने अड्डे पर सुरक्षित ले गए।

आद्योपन्त फ्लाइट लफ्टिनेन्ट नयनतारा कुन्जन पिल्लई राघव मेनन ने साहस, दृढ़-निश्चय और व्यावसायिक कौशल का परिचय दिया।

40. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट मोहन कुमार प्रभाकर सामंत (9061) फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट मोहन कुमार प्रभाकर सामंत ने एक लड़ाकू बमवार स्क्वाड्रन के पायलट के रूप में भारी जमीनी गोलाबारी और हवाई प्रतिरोध के बावजूद शत्रु के इलाके में बहुत अन्दर तक कई संक्रियात्मक उड़ानें भरीं। उन्होंने बहुत ही सुरक्षित सरगोधा हवाई अड्डे के हवाई फोटों लिए और साथ में महत्वपूर्ण सूचना लाए जो थलसेना और वायुसेना को आगे की योजनाएं बनाने में बड़ी लाभदायक सिद्ध हुई। 6 दिसम्बर, 1971 को लाला मूसा के मार्शलिंग यार्डों पर 2 अन्तरोधन उड़ानें भर कर, उन्होंने सैनिक सामान ले जाती हुई मालगाड़ी के एक इंजन और 10 डिब्बों को नष्ट कर दिया जिससे शत्रु को गोलाबारूद नहीं मिला। इन में से एक उड़ान के दौरान उन्होंने शत्रु की संचार व्यवस्था भंग की। 8 और 9 दिसम्बर, 1971 को उन्होंने चन्देर और वाल्टन हवाई अड्डों पर सफलतापूर्वक 2 हमलों का नेतृत्व किया और दौड़-पथ एवं विसर्जन क्षेत्र को व्यापक क्षति पहुंचाई। उन्होंने पूरी इच्छागिल नहर के और तवी नदी के पश्चिम में स्थित छम्ब क्षेत्र के फोटो लिए जो संक्रियात्मक कार्यों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण रहे।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट मोहन कुमार प्रभाकर सामंत ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

41. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रकाश नाथ शर्मा (9412) फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रकाल नाथ शर्मा ने एक हेलीकाप्टर यूनिट के एक पायलट के रूप में हमारी थलसेना की मदद के लिए अग्रिम हेलीपैडों से उड़ानें भरीं। उन्होंने नयाछोर, छाछोर और खिन्सार क्षेत्रों में हमारी थलसेना को खाद्य-सामग्री, पानी और गोला-बारूद पहुंचाने के लिए शत्रु के इलाके में काफी भीतर तक 50 उड़ानें भरीं और वहां से युद्ध में हताहत हुए सैनिकों को वापिस लाए। कभी-कभी तो उन्हें मरुस्थल में ऐसे ऊबड़-खाबड़ इलाकों में भी उतरना पड़ा जो शत्रु की गोलाबारी के पहुंच में थे। 11 दिसम्बर, 1971 को, जब वे एक उड़ान से वापिस लौट रहे थे और नयाछोर से करीब 6 मील दूर थे, उन पर शत्रु के 4 वायुयानों ने आक्रमण कर दिया। तब उन्होंने अपना हेलिकाप्टर तुरन्त ही रेत के दो टीलों के बीच उतारा और अपने कर्मीदल को रोटर से उड़ी घनी धूल की ओट में छुप जाने का आदेश दिया। शत्रु के वायुयानों ने हेलिकाप्टर और उसके कर्मीदल पर घनाघन गोलाबारी की और एक वायुयान ने तो 500 पौंड का बम भी गिराया परन्तु सब बेकार रहा क्योंकि लक्ष्य उनके हाथ नहीं लगा। इसमें हमें केवल इतनी क्षति पहुंची कि हेलीकाप्टर का पर्सपेक्स तहस-नहस हो गया और "रिडक्टर वे काउलिंग" फक से उड़ गया। अविचलित उन्होंने दुबारा उड़ान भरी और एक अग्रिम हैलीपैड पर अपने हेलिकाप्टर को ला उतारा। इस प्रकार उन्होंने न केवल हेलिकाप्टर को बचाया बल्कि अपने कर्मीदल के सदस्यों की जिन्दगी भी बचाई।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रकाश नाथ शर्मा ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

42. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट रवीन्द्र विक्रम सिंह (9524) फ्लाइंग (पायलट)

पाकिस्तान के विरुद्ध दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट रवीन्द्र विक्रम सिंह एक हेलिकाप्टर यूनिट के

फ्लाइट कमांडर थे । उन्होंने ऊंचे-नीचे इलाके में जोखिम-भरे काम किए । उन्होंने अपनी टोली को इतनी अच्छी तरह संगठित किया कि वह बहुत शक्तिशाली टोली बन गई और उसका काम हमेशा शानदार रहा । 16 दिसम्बर, 1971 को, सिलहट को उड़ान पर जाते समय उनका वायुयान जो कि एक किलोमीटर की ऊंचाई पर उड़ रहा था, शत्रु की जमीनी तोपों की गोलीबारी से क्षतिग्रस्त हुआ और एक गोली केबिन को बेध कर तेल की पाइप पर जा लगी । इस प्रकार उनके केबिन में गरम तेल रिस कर आने लगा । वे तुरन्त ही एक ही झटके में वायुयान को 1.5 किलोमीटर की ऊंचाई पर ले आए । तब तक रिडक्टर के तेल का दाब तेजी से गिरना आरम्भ हो चुका था । इतने में रात हो चुकी थी और अपने अड्डे या किसी दूसरे हवाई अड्डे पर उतरना सम्भव नहीं था । फिर भी, वे वायुयान को शत्रु के क्षेत्र से बाहर निकाल लाए । घुप अन्धेरे और कठिन हालात में कोई 15 मिनट उड़ने के बाद उन्होंने फेंचूगंज में नीचे उतरने के लिए उपयुक्त स्थान चुना और वे वायुयान को सही-सलामत नीचे उतार लाए और इस प्रकार, उन्होंने वायुयान, सवारियों और कर्मियों को बचा लिया । इससे पहले, 8 दिसम्बर, 1971 को भी अपने वायुयान को सही-सहा सलामत वापिस लौटा लाए थे हालांकि शत्रु की जमीनी तोपों ने सह-पायलट की सीट के 6 इंच पास तक मार की थी, और मुख्य रोटर ब्लेडों को दो बार और गियर बाक्स काउलिंग को एक बार निशाना बनाया था ।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट रवीन्द्र विक्रम सिंह ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

43. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट रुद्र कृष्ण बिश्नोई (9533)
फ्लाइंग (पायलट)

पाकिस्तान के विरुद्ध दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट रुद्र कृष्ण बिश्नोई पूर्वी क्षेत्र में एक परिवहन स्क्वाड्रन में तैनात थे । 10 दिसम्बर, 1971 को उन्हें सिलहट में हमारे अग्रिम सैनिक दस्तों के लिए वायुयान से रसद का काम सौंपा गया था । वे भरपूर गोलाबारूद लेकर उड़े और ठिकाने के ऊपर पहुंचते ही उन्हें जमीनी तोपों की भारी गोलाबारी का सामना करना पड़ा । जमीनी तोपों की अन्धाधुंध गोलाबारी के बावजूद, वे सामान गिराते रहे जिसे हमारे सैनिकों तक तुरन्त जरूरत का गोलाबारूद पहुंच गया । सामान गिराते समय, उनके वायुयान की तेल की बांई टंकी पर जमीन से तीन गोलियां लगी जिससे तेल की धार फूट निकली और इंजन गड़गड़ाने लगा । उन्होंने क्षतिग्रस्त वायुयान को संभाला, इंजन को बंद किया और अग्रिम अड्डे पर एक ही इंजन से वायुयान को सही-सलामत उतार लाए । आपत्काल में उन्होंने जो गोलाबारूद गिराया उससे हमारे दस्ते शत्रु पर हावी हो गए और उनका पलड़ा भारी हो गया । इससे पहले की रातों में भी उन्होंने शत्रु के हवाई अड्डों पर बमबारी करने के लिए एक ऐसे परिवहन वायुयान में उड़ान भरी जो हथियारबन्द नहीं था ।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट रुद्र कृष्ण बिश्नोई ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

44. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट फिलिप जार्ज (9603)
वैमानिकीय इंजीनियरिंग (मकैनिकल)

पाकिस्तान के विरुद्ध दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट फिलिप जार्ज एक स्क्वाड्रन के इंजिनियरिंग अफसर थे । सारी संक्रियाओं के दौरान उनके स्क्वाड्रन ने सौ फी सदी सेवा क्षमता बनाई रखी । स्क्वाड्रन के सभी वायुयान विभिन्न हवाई अड्डों से दिन-रात संक्रियात्मक टोह उड़ानों पर जाते रहे । इस शानदार काम का बहुत कुछ श्रेय फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट फिलिप जार्ज के अथवा प्रयत्नों को ही जाता है । उनके कुशल नेतृत्व ने उनके जवानों में इतना उत्साह भरा कि वे चौबीसों घंटे हंसी-खुशी काम करते रहे ।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट फिलिप जार्ज ने नेतृत्व, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

45. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट कोनेरीराजापुरम श्रीनिवासन राघवाचारी (9743)
फ्लाइंग (पायलट)

पाकिस्तान के विरुद्ध दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट कोनेराजापुरम श्रीनिवासन राघवाचारी ने पूर्वी क्षेत्र में एक संक्रियात्मक स्क्वाड्रन में काम किया । उन्होंने अनेक प्रहारक उड़ानें भरीं । कई बार उनके वायुयान को गोली लगी पर वे उसे हर बार अपने अड्डे पर सही-सलामत लौटा लाए । शत्रु की भारी जमीनी गोलाबारी की परवाह किए बिना, उन्होंने अपनी उड़ानों को पूरा किया और प्रहार करके ही लौटे । उन्हें शत्रु के कई ठिकानों को नष्ट करने का श्रेय प्राप्त है जिनमें दौड़-पथ, बंकर, तोपों के मोर्चे और सैनिकों के जमाव भी शामिल हैं ।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट कोनेरीराजापुरम श्रीनिवासन राघवाचारी ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

46. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट कुलदीप सिंह बाजवा (9757)
फ्लाइंग (पायलट)

पाकिस्तान के विरुद्ध दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट कुलदीप सिंह बाजवा पूर्वी क्षेत्र में एक संक्रियात्मक स्क्वाड्रन में तैनात थे । 4 दिसम्बर, 1971 को वे उस फार्मेशन के नं० 4 थे जिसने कि एक अति सुरक्षित हवाई अड्डे पर आक्रमण किया । लक्ष्य से जरा पहले उन्होंने ही सबसे पहले यह देखा कि उनकी फार्मेशन पर शत्रु के 3 सैबर वायुयान टूट पड़े थे । उन्होंने तुरन्त ही उचित कार्यवाही की और खतरे में घिरे वायुयानों को बचा लिया । बाद में उसी दिन तेजगांव पर हवाई आक्रमण करते समय जब वे अपनी फार्मेशन में नं० 2 थे, तो उन्होंने देखा कि उनके नेता पर एक सैबर विमान आक्रमण कर रहा है । इस बार भी, उन्होंने स्थिति को कुशलता से संभाला और अपने नेता को बताया कि वे समय रहते रास्ता काट जाएं । इसी समय शत्रु ने उन पर गोलाबारी की । उनका वायुयान क्षतिग्रस्त हुआ और अनियंत्रित होकर जमीन के पास पहुंचा । अपने वायुयान को शत्रु-प्रदेश में छोड़ने की बजाए, उन्होंने जमीन से कुछ ही फुट ऊपर अपने वायुयान पर काबू पाया और उसे वापिस अपने अड्डे पर लाने का प्रयत्न करने का निश्चय किया । वे उस क्षतिग्रस्त वायुयान को 150 समुद्री मील उड़ा कर अपने अड्डे पर सही सलामत ले आए । बाद में, उन्होंने भारी जमीनी गोलाबारी के बीच कई कारगर उड़ानें भरी । उन्होंने आक्रमाण करके शत्रु के गोलाबारूद के भण्डारों, तोपों के मोर्चों, टैंकों, नौकाओं, रेलगाड़ियों, बंकरों और इमारतों को क्षति पहुंचाई और शत्रु के जमावों पर सफलता से गोलियां बरसाईं ।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट कुलदीप सिंह बाजवा ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

47. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट रमेश ठाकुरदास चन्दानी (9797)
फ्लाइंग (पायलट)

पाकिस्तान के विरुद्ध दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट रमेश ठाकुरदास चन्दानी ने जम्मू-कश्मीर क्षेत्र पर 26 उड़ानें भरीं। 14 दिसम्बर, 1971 को, नैनाकोट से लौटते समय, उनके सह-पायलट ने उन्हें दिखाया कि हमारा एक वायुयान शत्रु की गोलाबारी का शिकार होकर जल रहा था। वे तुरन्त ही ध्वस्त वायुयान के पास उतरे और उसमें फसे एकमात्र जीवित, थलसेना के अफसर को बाहर निकाल कर उसकी जान बचाई।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट रमेश ठाकुरदास चन्दानी ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

48. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट कल्याण व्रत बागची (9987)
प्रशासनिक

पाकिस्तान के विरुद्ध दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट कल्याण व्रत बागची पूर्वी क्षेत्र में अंतरोधक निदेशक थे। 22 नवम्बर, 1971 को फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट बागची ने अपने रेडारस्कोप पर जैसोर के आसपास एक धब्बा सा देखा जो हमारी सीमा की ओर बढ़ रहा था। आधे मिनट के अन्दर ही उन्होंने दमदम से चार नेट संघर्ष के लिए उड़वाए। उन्होंने अपने लड़ाकू वायुयानों को ऐन मौके पर रखा और सामरिक दृष्टि से अपनी स्थिति ऐसी अचूक बना ली कि ज्योंहि पाकिस्तानी वायुसेना के घुसपैठिए वायुयान बोयरा के पास भारतीय प्रदेश में प्रविष्ट हुए, हमारे वायुयान उनसे निबटने के लिए तैयार थे। फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट बागची पायलटों का बराबर निदेशन करते रहे जिससे पाकिस्तानी वायुसेना के 3 सैबटर जैट मार गिराए जा सके और दो पायलटों को बन्दी बनाया जा सका।

इस कार्यवाही में, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट कल्याण व्रत बागची ने व्यवसायिक कौशल और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

49. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट जगजीत सिंह घूमन (10123),
फ्लाइंग (पायलट)

पाकिस्तान के विरुद्ध दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट जगजीत सिंह घूमन ने, लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन के पायलट के रूप में, हमारे सेना की सहायता के लिए 14 उड़ानें भरीं और दो टैंक, तीन गाड़ियों और शत्रु का तोपों का एक मोर्चा नष्ट किया। उन्होंने सुलेमांकी हैडवर्क्स पर भी सफलता से हमला किया हालांकि उसकी रक्षा का भारी प्रबन्ध था। शत्रु की बख्तरबन्द सेना को रोकने के लिए उसका विनाश बहुत जरूरी था। उन्होंने धर्मी गांव में जमा शत्रु-सेना पर, नारोवाल रेलवे यार्ड पर और जफरवाल क्षेत्र में मेहल्बन्नी गांव में जमा शत्रु के जमावों और टैंकों पर भी बमबारी की।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट जगजीत सिंह घूमन ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

50. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट जोगिन्दर पाल (10355),
वैमानिकीय इंजीनियरिंग (मकैनिक्ल),

पाकिस्तान के विरुद्ध दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट जोगिन्दर पाल ने अकेले हथियारों के सुधार, लदान और उतराई की और आकृति परिवर्तन की चौबीसों घंटे देखरेख की, और हथियारों की संक्रियाओं का भार भी लगभग उन्होंने ही संभाला। एक पखवाड़े के अन्दर स्क्वाड्रन का 4,00,000 पौंड वजन से अधिक के बम और दूसरी विविध सामग्री गिराना, उनकी कर्मठता और कर्त्तव्य-परायणता का द्योतक है।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट जोगिन्दर पाल ने व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

51. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट परमिन्दर जीत सिंह सिंध
(10488),
फ्लाइंग (पायलट)।

पाकिस्तान के विरुद्ध दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट परमिन्दर जीत सिंह सिधू एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन में पायलट थे। उन्होंने पूर्वी और पश्चिमी दोनों क्षेत्रों में शत्रु-प्रदेश में काफी अन्दर तक संक्रियात्मक उड़ानें भरीं। पूर्वी क्षेत्र में, गाइबांदा घाट को अनुरक्षी के रूप में उड़ान पर जाते समय, उन्होंने घाट को और कई स्तीमपोतों को क्षति पहुंचाई। बाद में, उन्होंने आक्रामक उड़ानें भरी और रंगपुर-बोगारा क्षेत्र में रेलगाड़ियों और मार्शलिंग यार्डों को नष्ट किया। पश्चिमी क्षेत्र में, उन्होंने सिद्दिन्या नहर क्षेत्र में एक आक्रामक उड़ान का नेतृत्व किया और नहर के पुलों और शत्रु के बंकरों को भारी क्षति पहुंचाई। ये सभी उड़ानें उन्होंने शत्रु की भारी जमीनी और हवाई गोलाबारी के बावजूद कीं।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट परमिंदर जीत सिंह सिधू ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपारायणता का परिचय दिया।

52. कैप्टन लक्ष्मी नारायण पद्मनाभन (आई० सी०
(13640),
वायु प्रेक्षण चौकी पायलट।

कैप्टन लक्ष्मीनारायण पद्मनाभन दिसम्बर, 1969 से हमारी वायु प्रेक्षण चौकी फ्लाइट में पायलट के रूप में सेवा कर रहे हैं। पाकिस्तान के विरुद्ध दिसम्बर, 1971 की संक्रियाओं के दौरान वे छम्ब क्षेत्र में कार्यरत थे। इस क्षेत्र में, शत्रु ने टैंकों और तोपों आदि का भारी जमाव किया हुआ था और यही क्षेत्र उसके आगे बढ़ने का मुख्य मार्ग था। 6 और 7 दिसम्बर, 1971 के बीच शत्रु के भारी जमीनी मुकाबले के बावजूद उन्होंने कुल मिला कर 31 संक्रियात्मक उड़ानें कीं। उन्होंने हमारे तोपखाने की तोपों का

कुशल संचालन किया, और वे शत्रु के अनेक टैंक, तोपें और गाड़ियों के काफिले को नष्ट करने में सहायक हुए।

आद्योपान्त कैप्टन लक्ष्मीनारायण पद्मनाभन ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

53. फ्लाइंग अफसर जी० दर्शा बाम्बोट (12025), फ्लाइंग (पायलट)।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइंग अफसर जी० दर्शा बाम्बोट पश्चिमी क्षेत्र में एक संक्रियात्मक स्क्वाड्रन में कार्य कर रहे थे। उन्होंने अनेक संक्रियात्मक उड़ानें भरीं। ऐसी ही एक उड़ान में, शत्रु के 4 मिग–19 वायुयानों ने उन पर हमला कर दिया। इस भिड़न्त में उनके वायुयान को गोली लगी, जिससे उसकी ड्राप-टंकी को क्षति पहुंची। यद्यपि उनके पास इंधन बहुत कम रह गया था, फिर भी वे वायुयान को सुरक्षित वापस ले आए। 4 दिसम्बर, 1971 को, जब वे छम्ब क्षेत्र में खोज और हमले के मिशन पर थ, तो शत्रु की विमान-भेदी तोपों ने उनके वायुयान पर गोले बरसाए और उसकी द्रवीय-प्रणाली को क्षति पहुंचाई। फिर भी, वे वायुयान को अड्डे पर वापस ले ही आए।

आद्योपान्त फ्लाइंग अफसर जी० दर्शा बाम्बोट ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

54. पायलट अफसर दलजीत सिंह शहीद (12387), फ्लाइंग (पायलट)।

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, पायलट अफसर दलजीत सिंह शहीद एक ब्रिगेड में वायु सम्पर्क दल के अग्रिम वायु नियंत्रक के रूप में, पूर्वी क्षेत्रों में तैनात थे। 4 दिसम्बर, 1971 को शत्रु की तोपों की भारी गोलाबारी और छोटे शस्त्रों की भयंकर मार के बावजूद, उन्होंने अखौरा में, हवाई हमला करने वाले वायुयानों का निर्देशन किया। शत्रु उनके मोर्चे पर भारी गोलाबारी कर रहा था, फिर भी, वे दो घन्टे तक अपने वायुयानों का निर्देशन करते ही रहे। उनके निर्देशन के ही कारण, हमारे वायुयानों के निशान इतने अचूक और कारगर रहे कि शत्रु को भारी क्षति पहुंची और उसके हौसले पस्त और तोपें खामोश हो गईं। इसके बाद, उन्होंने ढाका के बाहर, लक्ष्या नदी के किनारे एक ऊंची जगह पर मोर्चा जमाया और वहां से शत्रु के लक्ष्यों पर अचूक बमबारी कराई। हालांकि 13 दिसम्बर, 1971 को उन्हें दमे का दौरा पड़ा, फिर भी वे अग्रिम वायु नियंत्रक के रूप में अपनी ड्यूटी तब तक निभाते रहे, जब तक कि बलात् कब्जा जमाए बैठी पाकिस्तानी सेनाओं ने हथियार नहीं डाल दिए।

आद्योपान्त पायलट अफसर दलजीत सिंह शहीद ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

55. 18086 वारंट अफसर गुरदास राम दीक्षित, फिटर–I,

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान वारंट अफसर गुरदास राम दीक्षित पश्चिमी क्षेत्र में एक अग्रिम हवाई अड्डे पर स्टेशन वर्कशाप के प्रभारी वारंट अफसर के रूप में कार्य कर रहे थे। वे तकनीकी उपस्कर की तरह की खराबियों दूर करने, उनमें सुधार करने और मरम्मत के लिए जिम्मेदार थे। उन्होंने ऐसी व्यवस्था की कि वायुयानों से संबंधित सभी भू-उपस्करों को ठीक-ठाक करना और क्षति-ग्रस्त वायुयानों की छोटी-मोटी मरम्मतें तेजी से हो सकें।

आद्योपान्त वारंट अफसर गुरदास राम दीक्षित ने व्याव-सायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

56. 200582 फ्लाइट सार्जेन्ट परमेश्वरन डोरायस्वामी इलेक्ट्रिशियन–I

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट सार्जेन्ट परमेश्वरन डोरायस्वामी पश्चिमी क्षेत्र के एक अग्रिम हवाई अड्डे पर, अड्डे को रोशन रखने के प्रबन्ध के प्रभारी, वरिष्ठ नान-कमीशन अफसर के रूप में तैनात थे। उन पर यह जिम्मेदारी थी कि दौड़-पथ की बत्तियों, क्रैश-बूरियरों, हवाई हमले की चेतावनी देने के साधनों और रोशनी से संकेत भेजने के यंत्रों जैसी बिजली से चलने वाली सभी प्रणालियों को जो कि संक्रियाओं की सफलता के लिए महत्वपूर्ण थे सही बनाए रखे। उन्हें जो भी कार्य सौंपे गए, उन्होंने सभी को, हवाई हमलों के बावजूद, सफलता से पूरा किया।

आद्योपान्त सार्जेन्ट परमेश्वरन डोरायस्वामी ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

57. 217249 सार्जेन्ट रथिनासबपथी कन्नियाह एयर सिगनलर

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, सार्जेन्ट रथिनासबपथी कन्नियाह वायुयान से सामान पहुंचाने वाली एक फ्लाइट में कार्य कर रहे थे, जिसका काम विभिन्न उपस्कर डिपुओं से अत्यावश्यक अतिरिक्त कल-पूर्जे लेकर अग्रिम हवाई अड्डों पर पहुंचाना था। उन्हें हर रोज कई घंटों तक उड़ान करनी पड़ती थी, और अधिकतर काफी रात गए नीचे उतरने का मौका मिलता था फिर भी, वे सदा प्रसन्न रहते, और अन्य कर्मियों को भी उनसे प्रेरणा मिलती थी। इसका श्रेय उन्हीं को था कि वायुयान से सामान पहुंचाने वाली उस फ्लाइट को सौंपे गए सभी कार्य सफलता से पूरे हो सके।

आद्योपान्त सार्जेन्ट रथिनासबपथी कन्नियाह ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

58. 220331 सार्जेन्ट मोहन लाल पाल, फिटर आर्मरर

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, सार्जेन्ट सोहन लाल पाल पश्चिमी क्षेत्र में एक संक्रिया-त्मक स्क्वाड्रन में कार्य कर रहे थे। 3 दिसम्बर, 1971 को

साढ़े ग्यारह बजे, वे अपने स्क्वाड्रन के वायुयानों को विसर्जन-क्षेत्र में ले जाने के काम की निगरानी कर रहे थे। उसी समय वहां शत्रु ने बम गिराने शुरू कर दिए और विसर्जन-क्षेत्र के पास ही कई बम गिरे। उन्होंने अपने आदमियों को प्रोत्साहित किया और वायुयान पर कार्य करते रहे। इसी बीच, विसर्जन-क्षेत्र के ऐन निकट एक बम फटा। फिर भी, वे घबराए बिना, शान्ति से कार्य करते रहे। उनकी देखा-देखी, दूसरे व्यक्ति भी बिना रुके अपना कार्य करते रहे। इसका फल यह हुआ कि सभी वायुयान संक्रियाओं के लिए बिल्कुल ठीक-ठाक मिलते रहे।

इस कार्यवाही में, सार्जेन्ट सोहन लाल पाल ने साहस, नेतृत्व, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

59. 228889 सार्जेन्ट सतीश कुमार सोनी
इलेक्ट्रिशियन–I

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, सार्जेन्ट सतीश कुमार सोनी पूर्वी क्षेत्र में एक संक्रियात्मक स्क्वाड्रन में कार्य कर रहे थे। अत्यन्त तात्कालिक महत्व के टोह-कार्यों पर भेजे जाने वाले वायुयान की सफाई-मरम्मत के लिए उन्हें वायुयान से तेजपुर और गोहाटी भेजा गया। दोनों ही मौकों पर, दिन-रात काम करके, उन्होंने इन स्थानों पर के वायुयानों की सफाई मरम्मत आदि की और, इस प्रकार सभी वायुयानों को अपने मिशन सफलता से पूरा करने योग्य बनाया।

आद्योपान्त सार्जेन्ट सतीश कुमार सोनी ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

60. 234022 सार्जेन्ट पचीरी सिवसंकरन,
इलेक्ट्रिशियन–I

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, सार्जेन्ट पचीरी सिवसंकरन एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन में सर्विसिंग पार्टी के प्रभारी वरिष्ठ नान-कमीशन अफसर के रूप में कार्य कर रहे थे। 6 दिसम्बर, 1971 को सांय 5 बजे के करीब ज्योंही एक वायुयान नीचे उतरा और ब्लास्ट पैन के प्रवेश द्वार पर उसने इंजन बन्द किया कि हवाई अड्डे पर शत्रु के वायुयानों ने हमला कर दिया। अपने प्राणों की परवाह न करते हुए, उन्होंने कुछ वायुसैनिकों की सहायता से उस वायुयान को ब्लास्थ पैन में धकेल ही दिया और इस तरह वह कीमती वायुयान बचा लिया। 17 दिसम्बर, 1971 को, उड़ने के लिए तैयार एक पायलट ने काकपिट में पेटी बांधी ही थी कि हवाई हमले का भोंपू बजा। अपनी जान हथेली पर रख कर, सार्जेन्ट पचीरी सिवसंकरन ने ऐसी व्यवस्था की, कि वायुयान का इंजन चालू हो गया और दौड़ भागा।

इन कार्यवाहियों में, सार्जेन्ट पचीरी सिवसंकरन ने साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

सं० 109-प्रेज०/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं में उनके असाधारण कर्त्तव्यपरायणता अथवा साहस के उपलक्ष में उनको "वायु सेना मैडल का बार" सहर्ष प्रदान करते हैं :—

1. विंग कमांडर विजय चन्द मनकोटिया (4041), वी० एम० फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, विंग कमांडर विजय चन्द मनकोटिया एक परिवहन बेस के स्टेशन कमांडर थे। उन्होंने अपने बेस में ऐसी असाधारण सुविधाओं की व्यवस्था की कि लड़ाई के दौरान लड़ाकू वायुयानों की संक्रियाएं अत्यन्त सुचारू ढंग से और सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। उन्होंने इस बात का ध्यान रखा कि लड़ाकू वायुयानों की प्रशासनिक एवं संक्रियात्मक दोनों प्रकार की सभी जरूरतें पूरी हों। इसके अतिरिक्त, उन्होंने फेर बदल करके एक परिवहन वायुयान से बममारी का काम भी लिया। इस वायुयान की प्रथम उड़ान का नेतृत्व उन्होंने स्वयं किया और इसने रात के समय शत्रु के हवाई अड्डों पर शत्रु की नाक में दम करने और दिन के समय उसके द्वारा रक्षित लक्ष्यों पर प्रहार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आद्योपान्त विंग कमांडर विजय चन्द मनकोटिया ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

2. स्क्वाड्रन लीडर ट्रेवर जोसफ फरनान्डेस (5287), वी०एम० फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर ट्रेवर जोसफ फरनान्डेस एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन के फ्लाइट कमांडर थे। हमारी थलसेना की सहायता के लिए उन्होंने 14 संक्रियात्मक उड़ानें भरीं और शत्रु का एक टैंक, चार गाड़ियां और एक तोप-मोर्चा नष्ट किया। उन्होंने सुलेमानकी बांध पर सफलतापूर्वक आक्रमण किए और अचूक निशाने से बम गिराए, जिससे शत्रु के बख्तर सेना को आगे बढ़ने में भारी रुकावट पड़ी। इसके अतिरिक्त उन्होंने जफरवाल और नारोवाल के रेल-यार्डों पर सफलता से बममारी की और वाल्टम रेडार यूनिट पर भी आक्रमण किया।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर ट्रेवर जोसफ फरनान्डेस ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

3. 400372 वारंट अफसर रंगप्पा रंगस्वामी, वी० एम०, फ्लाइट गनर/फिटर आर्मरर

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान वारंट अफसर रंगप्पा रंगस्वामी एक परिवहन स्क्वाड्रन में फ्लाइट गनर के रूप में कार्य कर रहे थे। उन्होंने अनेक बममारी उड़ानों में भाग लिया। 3 दिसम्बर, 1971 को, रात की बममारी के दौरान, उनके वायुयान पर शत्रु ने भारी और तेज जमीनी गोलाबारी की। कुछ गोलियां तो सीधी वायुयान पर आकर लगीं और गनर-केबिन में से पार हो गईं। फिर भी, उन्होंने अपनी तोपों से कुशलता से गोलाबारी जारी रख कर शत्रु को भारी क्षति पहुँचा कर, उसे खामोश कर दिया। अपनी जान हथेली पर रख कर, उन्होंने सभी उड़ानों में अपना कार्य पूरी कर्त्तव्यनिष्ठा और साहस से पूरा किया।

औद्योपान्त वारंट अफसर रंगप्पा रंगस्वामी ने साहस, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

सं० 110-प्रेज०-72—राष्ट्रपति रक्षा मंत्री द्वारा नौसेनाध्यक्ष से प्राप्त लेफ्टिनेन्ट शान्ति प्रसाद व्यास (एक्स) के नाम को भारत के राजपत्र में प्रकाशित करने का सहर्ष आदेश देते हैं, जिनका दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान से हुए युद्ध में वीरता के लिए नामोल्लेख किया गया था ।

सं० 111-प्रेज०/72—राष्ट्रपति तमिल नाडू अग्नि शमन सेवा के निम्नांकित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम तथा पद

श्री मुतैया रत्तिनम,
फायरमन सं० 2094,
मदुराई फायर स्टेशन,
जिला मदुराई,
तमिल नाडू ।

श्री अलागरस्वामी चिनैय्या,
फायरमैन सं० 1833,
मदुराई फायर स्टेशन,
जिला मदुराई,
तमिलनाडू ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया :

17 दिसम्बर, 1971 को लगातार वर्षा के फलस्वरूप वैगई नदी में बाढ़ आ गई । नदी के दोनों ओर बचाव कार्यों के लिए तल्लाकुलम तथा मदुराई फायर स्टेशनों के अग्नि शमन सेवा कर्मचारियों को बुलाया गया । मदुराई फायर स्टेशन के श्री मुतैया रत्तिनम तथा श्री अलागरस्वामी चिनैय्या को थाथानेरी में रेल पुल के दक्षिण की ओर बचाव कार्यों पर लगाया गया था जहां तट से 30 फुट की दूरी पर नदी के बांध पर 5 व्यक्ति घिरे हुए देखे गये थे । श्री रत्तिनम तथा श्री चिनैय्या तेज धार में तैर कर उस पार गये और 5 में से 3 व्यक्तियों को उन्होंने बचा लिया । श्री मुत्तैया रत्तिनम तथा श्री अलागरस्वामी चिनैय्या जब घिरे हुए शेष दो व्यक्तियों को बचाने का प्रयत्न कर रहे थे, तो दोनों बाढ़ में बह गये । उन्होंने एक उखड़े हुए नारियल के पेड़ को पकड़ लिया और नदी के बहाव के साथ तैरने लगे, परन्तु एक भंवर के कारण वे पुनः बाढ़ के पानी में फंस गये । श्री रत्तिनम नदी में और आगे चनैक्कल की पुलिया तक बहते चले गये और वहां से वह विक्टर ब्रिज की ओर बहते हुए एक छोटे मंडपम के समीप पहुंचे । वह मंडपम के ऊपर चढ़ गये, जहां उन्होंने देखा कि 5 व्यक्ति वहां बैठे बचाव के लिए सहायता की प्रतीक्षा कर रहे थे । यद्यपि उनके सारे शरीर में अनेक चोटें लगी थीं और वे बिल्कुल निढाल हो चुके थे, फिर भी उन्होंने बाढ़ से घिरे हुए व्यक्तियों को बचाने के लिए बचाव दल द्वारा पानी में डाले गये शहतीर पर दो महिलाओं को बैठाया । तत्पश्चात उन्होंने सावधानी से शहतीर पर इन महिलाओं का भार संतुलित किया । जब श्री रत्तिनम शहतीर को आगे ले जा रहे थे, तो वे पुनः बह गये । पानी के तेज बहाव में तैरने का उन्होंने अथक प्रयत्न किया और बड़ी कठिनाई से बिलकुल निढाल होकर किनारे पर पहुंचे । दूसरी ओर, श्री चिनैय्या पानी में बह जाने के पश्चात् नदी के बीच एक मंडपम पर पहुंचे जहां वे बिना भोजन और बिना आराम के 24 घंटे तक रहे ।

श्री मुतैय्या रत्तिनम, फायरमैन तथा श्री अलागरस्वामी चिनैय्या, फायरमैन, ने डूबते हुए व्यक्तियों को बचाने में अपनी निजी सुरक्षा की परवाह न करते हुए उत्कृष्ट वीरता तथा सूझ-बूझ का परिचय दिया ।

2. ये पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 17 दिसम्बर, 1971 से दिया जाएगा ।

सं० 112-प्रेज०/72 —राष्ट्रपति तमिलनाडू अग्नि शमन सेवा के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस तथा अग्नि शमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री तिरुवरशु कुलन्दैवेलु,
प्रमुख फायरमैन सं० 1410,
ताल्लाकुलम फायर स्टेशन,
जिला मदुराई,
तमिलनाडू

(स्वर्गीय)

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया :

17 दिसम्बर, 1971 को लगातार वर्षा के परिणामस्वरूप मदुराई जिले में वैगई नदी में बाढ़ आ गई । अनेक व्यक्ति, जिन्होंने नदी के पाट में झोपड़ियां बनाई हुई थीं, नदी के बीच घिर गये । घिरे हुए व्यक्तियों को बचाने के लिए मदुराई के कलेक्टर ने एक हैलीकोप्टर मांगा । श्री तिरुवरशु कुलन्दैवेलु ने बचाव कार्य के लिए मदुराई जिले के कलेक्टर के साथ हैलीकोप्टर में जाने के लिए अपने आपको प्रस्तुत किया । रामारोयर मंडपम क्षेत्र तथा उसके इर्द-गिर्द का हवाई सर्वेक्षण करते समय कुछ व्यक्ति एक मंडपम के ऊपर जोकि तट से 300 फुट की दूरी पर नदी के बीच म था जोकिमपूर्ण ढंग से उससे चिपके हुए दिखाई पड़े । बाढ़ का पानी बढ़ता जा रहा था और मंडपम का डूब जाना निश्चित था । श्री कुलन्दैवेलु ने हैलीकोप्टर से बाढ़ से घिरे हुऐ व्यक्तियों को बचाया और हैलीकोप्टर में उन्हें किनारे तक लाये । कलेक्टर को किनारे पर छोड़ने के बाद श्री कुलन्दैवेलु ने हैलीकोप्टर में और फेरे लगाये और बाढ़ से घिरे हुऐ पांच और व्यक्तियों को बचाया । चार फेरों में 7 व्यक्तियों को बचा लेने के बाद उन्होंने एक महिला को बचाने के लिए, जिसके बचाव के लिए पहले किए गए प्रयत्न उसकी घबराहट के कारण असफल रहे थे, एक और फेरा लगाया । श्री कुलन्दैवेलु उस महिला को बचाने के लिए जितना समीप संभव हो सकता था, पहुंचे परन्तु हैलीकोप्टर अकस्मात उड़ते हुए बाढ़ के पानी से छू गया जिसमें पानी तुरन्त उसके इंजन में चला गया, जिसके परिणामस्वरूप

हैलीकोप्टर का इंजन फट गया और हैलीकोप्टर बाढ़ के पानी में डूब गया। हैलीकोप्टर का पायलट तैर कर नदी पार कर गया परन्तु श्री कुलन्दैवेलु शायद अपने कमर में बंधी पेटी नहीं खोल सके और वे हैलीकोप्टर ही में बाढ़ के पानी में फंस गये। उनका शव दूसरे दिन एक फर्लांग की दूरी पर टूटे हुए हैलीकोप्टर में से निकाला गया।

श्री तिरुवरशु कुलन्दैवेलु ने बाढ़ से घिरे हुए व्यक्तियों के प्राण बचाने में उत्कृष्ट वीरता तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया और अपने कर्त्तव्य को निभाते हुए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया।

2. यह पदक राष्ट्रपति का पुलिस तथा अग्निशमन सेवा पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 17 दिसम्बर, 1971 से दिया जाएगा।

नागेन्द्र सिंह,
राष्ट्रपति के सचिव

इस्पात और खान मंत्रालय
(इस्पात विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक सितम्बर 1972

दुर्गापुर-18(5)/72—इस मंत्रालय के दिनांक 1 अगस्त, 1972 के संकल्प संख्या दुर्गापुर-18(5)/72 को देखिए, जिसके द्वारा इस्पात कारखानों की बेलन मिलों में 'दोषयुक्त माल' 'रद्दी माल' और 'स्क्रैप' के अधिक मात्रा में निकलने के कारणों का पता लगाने तथा इस स्थिति में सुधार करने के लिए उपाय सुझाने के लिए एक तकनीकी समिति का गठन किया गया था।

2. समिति ने सितम्बर, 1972 के अन्त तक सरकार को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर देनी थी। समिति के अध्यक्ष ने अभिवेदन किया है, कि समिति इस तारीख तक अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत नहीं कर सकेगी, क्योंकि वह आधिकारिक कर्तव्य पर लगभग अक्तूबर, 1972 के मध्य तक भारत से बाहर रहेंगें। इन परिस्थितियों में यह निश्चय किया गया है कि समिति को अपनी रिपोर्ट नवम्बर, 1972 के अन्त तक प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान की जाए।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इसे सर्वसाधारण के सूचनार्थ भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाये।

के० वी० रामनाथन, संयुक्त सचिव

कृषि मंत्रालय
(कृषि विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 22 अगस्त 1972

संकल्प

सं० 7-6/72-अर्थ नीति—भारत सरकार एतद्द्वारा राज्य सभा के सदस्य श्री मोहन सिंह को, राज्य सभा के भूतपूर्व सदस्य, श्री एन० एस० बरार के स्थान पर, कृषकों के उस पैनल के सदस्य के रूप में नियुक्त करती है, जिसका गठन संकल्प संख्या 6-26/69 अर्थ नीति दिनांक 3 अप्रैल 1972 के द्वारा किया गया था।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रति भारत सरकार के समस्त मंत्रालयों और विभागों, राज्य और संघ शासित प्रशासनों, योजना आयोग, प्रधान मंत्री के सचिवालय, राष्ट्रपति के सचिवालय, लोक सभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, भारत के महानियंत्रक और महालेखा परीक्षक, अर्थ शास्त्रियों के पैनल के समस्त सदस्य, कृषि वैज्ञानिकों के पैनल और कृषि मंत्रालय (कृषि विभाग) के समस्त संलग्न और अधीनस्थ कार्यालयों को भेज दी जाये।

आदेश दिया जाता है कि संकल्प को भारत के राजपत्र में सामान्य सूचना के लिये प्रकाशित किया जाये।

का० मु० अहमद, संयुक्त सचिव

शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय
(शिक्षा विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 15 सितम्बर 1972

सं० एफ० 1-2/72-वाई० एस०-1(2)—शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय के संकल्प सं० एफ० 1-2/72-वाई०एस०-1(2) दिनांक 13 अप्रैल, 1972, जो कि बाद में सं० एफ० 1-2/72-वाई० एस०1 (2), दिनांक 22 जून, 1972 द्वारा संशोधित किया गया था, के पैरा 2(5) और (6) के अनुसरण में, निम्नलिखित संसद सदस्यों को 12 अप्रैल, 1975 को समाप्त होने वाली अवधि तक के लिए अखिल भारतीय खेल परिषद् में तत्काल मनोनीत किया जाता है।

लोक सभा

1. श्री इन्द्रजीत गुप्ता
2. श्री जुल्फीकार अली खां
3. श्री जी० बैंकट स्वामी
4. श्री बयालार रवि

राज्य सभा

1. श्री बिट्ठल गाडगिल
2. श्री के० पी० सिंह देव

सं० एफ. 1-2/72-वाई० एस०-1(2)—अखिल भारतीय खेल संघ के सदस्य, श्री एम० एल० कपूर को इस मंत्रालय की अधिसूचना संख्या एफ० 1-2/72-वाई० एस०-1 (2), दिनांक 2 मई, 1972 के पैरा 2 द्वारा स्थापित की गई परिषद् की कार्यकारिणी समिति में एतद्द्वारा 7 मई, 1972 से एक वर्ष की अवधि तक के लिए मनोनीत किया जाता है।

कांति चौधरी, संयुक्त सचिव

सिंचाई और विद्युत् मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 19 सितम्बर 1972

संकल्प

सं० 14/6/72-ज० वि०—कावेरी पर तथ्यान्वेषी समिति के गठन के संबंध में इस मंत्रालय के संकल्प संख्या 14/6/72-ज० वि०, दिनांक 12 जून 1972 के संदर्भ में, समिति द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत

करने की तिथि एतद्द्वारा 15 दिसम्बर, 1972 के अन्त तक बढ़ा दी गई है ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की प्रति तमिलनाडु, मैसूर, और केरल की सरकारों, राष्ट्रपति सचिवालय, प्रधान मंत्री सचिवालय, योजना आयोग और वित्त मंत्रालय को भेज दी जाए ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए ।

सत्येन्द्र नाथ गुप्ता, संयुक्त सचिव

नई दिल्ली, दिनांक 20 सितम्बर 1972

सं० बिजली-दो-1(3)/72—केन्द्रीय बिजली सलाहकार परिषद् की नई दिल्ली में 5 अगस्त, 1972 को हुई तीसरी बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसरण में, ग्रामीण क्षेत्रों में कृषकों तथा अन्य उपभोक्ताओं द्वारा विद्युत् सम्भरण के संबंध में अनुभव की जा रही कठिनाइयों की जांच करने के लिए और उपचारी उपाय सुझाने के लिए निम्नलिखित समिति नियुक्त की गई है :—

1.	श्री बैजनाथ कुरील, सिंचाई और विद्युत् उपमंत्री	अध्यक्ष
2.	श्री आर० के० गोस्वामी, राज्य मंत्री, विद्युत्, उत्तर प्रदेश लखनऊ	सदस्य
3.	श्री मोहम्मद इद्रिस, उद्योग और विद्युत् मंत्री, असम, शिलांग ।	सदस्य
4.	डा० जे० एन० मिश्र, सहकारिता और बिजली मंत्री, बिहार, पटना ।	सदस्य
5.	श्री त्रिजमोहन मोहन्ती, सिंचाई और विद्युत् मंत्री, उड़ीसा भुवनेश्वर ।	सदस्य
6.	श्री पी० वेंकटसुन्बय्या, संसद सदस्य (लोक सभा)	सदस्य
7.	श्री कोंडाली बासप्पा, संसद सदस्य (लोक सभा)	सदस्य
8.	श्री बी० एस० भौरा, संसद् सदस्य (लोक सभा)	सदस्य
9.	श्री पी० एस० पाटिल, संसद सदस्य (राज्य सभा)	सदस्य
10.	श्री एन० वेंकटेसन, सदस्य (समुपयोजन), केन्द्रीय जल और विद्युत् आयोग, (विद्युत् स्कंध)	सदस्य-सचिव

2. समिति अपनी रिपोर्ट 6 महीने की अवधि के अन्दर प्रस्तुत कर देगी ।]

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की प्रतियां सभी राज्य सरकारों, संघ राज्य क्षेत्रों और राज्य बिजली बोर्डों को व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए भेजी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए ।

श्री० ना० त्रिपाठी, संयुक्त सचिव

नई दिल्ली, दिनांक 21 सितम्बर 1972

संकल्प

सं० ई० एल० एक-32(54)/70—कुछ समय से बहुत सी जगहों पर कई उत्पादन यूनिटों में बार-बार खराबियां आ जाती हैं जिससे अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में विद्युत् संभरण भंग हो जाता है । भारत सरकार ने यह फैसला किया है कि पहली मार्च, 1974 तक विशेषज्ञों के दो दल गठित किए जाएं—एक ताप-विद्युत् केन्द्रों के लिए और दूसरा जल-विद्युत् केन्द्रों के लिए । वे संबंधित राज्य बिजली बोर्डों/विद्युत् विभागों के मुख्य इंजीनियरों के साथ देश के विद्युत् केन्द्रों का निरीक्षण करेंगे और उत्पादन संयंत्रों के प्रचालन के संबंध में समय-समय पर रिपोर्ट देंगे तथा उनके प्रचालन और अनुरक्षण में सुधार के तरीकों का सुझाव देंगे । दलों में निम्नलिखित शामिल होंगे :—

I. **तापीय दल**

1. श्री के० आर० राधाकृष्णन, निवृत्त अध्यक्ष,
   तमिलनाडु राज्य बिजली बोर्ड, मद्रास ।
2. श्री सी० लक्ष्मीपति, निवृत्त मुख्य इंजीनियर,
   आंध्र प्रदेश राज्य बिजली बोर्ड, हैदराबाद ।
3. श्री एल० जे० साने, निवृत्त मुख्य इंजीनियर,
   मध्य प्रदेश बिजली बोर्ड, जबलपुर ।

II. **जल विद्युत दल**

1. श्री के० एल० विज, निवृत्त उपाध्यक्ष,
   केन्द्रीय जल और विद्युत् आयोग,
   नई दिल्ली ।
2. श्री जी० एस० ज्ञानी,
   निवृत्त सदस्य, भाखड़ा प्रबंध बोर्ड ।
3. श्री वी० गणपति,
   निवृत्त तकनीकी सदस्य,
   केरल राज्य बिजली बोर्ड,
   त्रिवेन्द्रम ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की प्रतियां सभी राज्य सरकारों (बिजली विभागों)/संघ राज्य क्षेत्रों (बिजली विभागों)/राज्य विद्युत् बोर्डों को भेज दी जाएं ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए ।

बी० पी० पटेल, सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 23rd September 1972

No. 107-*Pres.*/72.—The Police Medal for meritorious service awarded to Shri Alagappa Pillai Kuttalalingom Pillai, Superintendent of Police, Anti-corruption Branch, Kerala, in the President's Secretariat Notification No. 55-Pres./66, dated the 15th August, 1966, published at page 584 of Part I, Section 1 of the Gazette of India dated the 20th August, 1966, is hereby cancelled and the medal forfeited under Rule 8 of the Rules governing the Police Medal.

No 108-*Pres*/72.—The President is pleased to approve the award of the "VAYU SENA MEDAL" / "AIR FORCE MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage during the recent operations against Pakistan :—

1. Group Captain KOTTAVATHUKAL THOMAS ABRAHAM (3600).

Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Group Captain Kottavathukal Thomas Abraham was commanding a Signals Unit in the Western Sector. He was in control of an Air Defence Direction Centre and a number of Ground Control Interception and Early Warning Units. A number of Air Defence Artillery Brigades and Surface to Air Guided Weapons Squadrons were also placed under his functional control. In addition, a completely new system including a chain of Observation Posts were inducted into the existing system. With sound planning, hard work and inspiring leadership, Group Captain Abraham accomplished all the tasks creditably. The ground work laid down by him prevented the enemy Air Force from carrying out any productive strike. When enemy aircraft attacked and damaged some equipment of his unit, he made it possible for the unit to resume operations with commendable speed and also to handle the heavy volume of operational traffic.

Throughout, Group Captain Kottavathukal Thomas Abraham displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

2. Wing Commander SOMENDRA KUMAR ROY (4032)

Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971 Wing Commander Somendra Kumar Roy was commanding a Transport Squadron. He was the Force Commander of his squadron aircraft that took part in the airborne operation on the 11th December, 1971. He planned and organised the operation and led his force with cool courage and carried out the airborne operation with great success.

In this action, Wing Commander Somendra Kumar Roy displayed courage, leadership and professional skill.

3. Wing Commander JOHNEY WILLIAM GREENE (4093), Vr. C.

Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Wing Commander Johney William Greene was commanding a Fighter Squadron. He flew a number of operational missions in the form of Combat Air Patrol, sweeps and escort. On the 4th December, 1971, while he was on Combat Air Patrol mission, two F-104 aircraft attempted to attack an airfield. Even though he was alone in the air, he took offensive action and attacked the enemy aircraft. The enemy aircraft jettisoned the tanks and armament load and engaging the reheat, retreated towards their own territory.

Throughout, Wing Commander Johney William Greene displayed courage, professional skill and devotion to duty.

4. Wing Commander MAN SINGH (4094)

Flying (Pilot)

Wing Commander Man Singh was commissioned in the Flying Branch of the Indian Air Force in June, 1951, and has been employed on the operational staff of Headquarters Western Air Command since June, 1969. He improved the operational efficiency of the Squadrons under Western Air Command. He successfully organised and conducted numerous exercises to test the efficiency of the Squadrons. He contributed greatly to the formulation of the Operational plans of the Command and his advice had always been very useful.

He made a significant contribution towards the success of the plans of the Command Headquarters during the operations against Pakistan in December, 1971.

Throughout, Wing Commander Man Singh displayed professional skill and devotion to duty.

5. Wing Commander GURSHARAN SINGH (4263), VSM

Aeronautical Engineering (Mechanical)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Wing Commander Gursharan Singh was serving as the Chief Technical Officer of an Operational Wing. His sustained work resulted in a high rate of fighter and bomber serviceability. With complete disregard to personal comfort and undeterred by multifacious maintenance problems, he worked round the clock to produce excellent results.

Throughout, Wing Commander Gursharan Singh displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

6. Wing Commander KUMARAPALAYAM RAMASUBRAMANIAM NATARAJAN (4270)

Aeronautical Engineering (Mechanical)

Wing Commander Kumarapalayam Ramasubramaniam Natarajan was commissioned in the Aeronautical Engineering (Mechanical) Branch of the Indian Air Force in February, 1952. He was posted as Senior Technical Staff Officer of Headquarters Eastern Air Command in January, 1970. From February, 1971 he has been functioning as Command Engineering Officer responsible for maintenance of all aircraft and airborne equipments including the provisioning responsibilities associated with it. There was need for streamlining and systematising the *modus operandi* so that timely action was initiated to ensure that spares were produced in a scientific manner. There was also the need for rationalising the second-line servicing aspects to ensure optimum efficiency. He infused a sense of urgency and understanding of the problem to the various units concerned and his efforts resulted in a high degree of serviceability of aircraft during the operations against Pakistan in December, 1971.

Throughout, Wing Commander Kumarapalayam Ramasubramaniam Natarajan displayed professional skill and devotion to duty.

7. Wing Commander ANADI SHANKAR SARKAR (4273)

Aeronautical Engineering (Mechanical)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Wing Commander Anadi Shankar Sarkar was serving as Chief Technical Officer at an Operational Wing. With his personal example, man management, he ensured a very high rate of serviceability of air craft inspite of staggering number of sorties flown and the damage caused to the aircraft by enemy action. He was responsible for the expeditious repair of five aircraft which were unserviceable. Under his supervision and guidance, a very high rate of serviceability of specialist vehicles was ensured resulting in quick turn around of the aircraft. He had so geared up the station workshop that it manufactured certain items which were earlier considered beyond local capability.

Throughout, Wing Commander Anadi Shankar Sarkar displayed initiative, professional knowledge and devotion to duty.

8. Wing Commander GANDHARVA SEN (4429), AVSM

Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Wing Commander Gandharva Sen was commanding a Signal Unit. His unit stopped functioning only once despite the fact that it was subjected to twenty-nine enemy air attacks. Even on that one occasion, the disruption of power supply and damage to the equipment was rectified in about half an hour. When his Unit was called upon to perform the additional role of Air Defence Direction Centre, he rendered valuable assistance in arranging air defence of the tactical areas, protection of our own aircraft on offensive missions and organising aggressive action over enemy territory in the form of sweeps. Apart from the operational tasks directly connected with the Unit, he also carried out the task of training a large number of personnel from the Air Force to enable them to man the low level reporting system which functioning very well during hostilities.

Throughout, Wing Commander Gandharva Sen displayed courage, professional skill and devotion to duty.

9. Wing Commander KESHAVA DEV KANAGAT (4433)

Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Wing Commander Keshava Dev Kanagat was commanding a Maritime Reconnaissance Squadron. The work of maritime reconnaissance, search sighting and reporting and guidance carried out by the Squadron in close cooperation with the Indian Navy was of very vital importance to the Naval operations and contributed considerably towards the success of Naval operations both in the Western and Eastern Sectors. He carried out the maximum number and most hazardous missions himself and was a source of inspiration and courage to his aircrew. It was largely due to him that the squadron carried out all maritime operations assigned to it successfully.

Throughout, Wing Commander Keshava Dev Kanagat displayed courage, professional skill and devotion to duty.

10. Wing Commander JAGJIT SINGH SAWHNEY (4449) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Wing Commander Jagit Singh Sawhney was commanding a Transport Squadron. Although his Squadron was deployed at three places, he remained in constant touch with all these detachments to ensure optimum work-out-put. He led his Squadron in airborne operations over Bangladesh and also took part in the airlift of an Infantry Brigade.

Throughout, Wing Commander Jagjit Singh Sawhney displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

11. Wing Commander RAJARAM JAYARAM AMBEGAONKER (4622)

Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Wing Commander Rajaram Jayaram Ambegaonker was commanding a Transport Squadron which was deployed in the Eastern Sector. He increased the output of his squadron and toned up the operational efficiency of air-crew and ground-crew. He also improved the serviceability state of his aircraft by organizing aircraft maintenance on a 24 hours basis. He led a section of aircraft in the airborne operation over Bangladesh on the 11th December, 1971, and though a restraining strap on his aircraft gave way causing the premature extraction of a part of his load, he maintained control over the aircraft and completed the missions.

Throughout, Wing Commander Rajaram Jayaram Ambegaonkar displayed courage, leadership, professional skill and devotion to duty.

12. Wing Commander KARAM SINGH (5132), AVSM Aeronautical Engineering (Mechanical)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Wing Commander Karam Singh was in charge of the Aircraft Servicing Division of a Base Repair Depot. He was responsible for carrying out major repairs and camera modification of a large number of aircraft. He inspired his men to work day and night and produced maximum number of aircraft in record time for operational use by the Squadrons.

Throughout, Wing Commander Karam Singh displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

13. Squadron Leader THITTANIMUTTAM KRISHNASWAMY SESHACHARI (4954)

Aeronautical Engineering (Mechanical)

Squadron Leader Thittanimuttam Krishnaswamy Seshachari was commissioned in the Aeronautical Engineering (Mechanical) Branch of the Indian Air Force in April, 1955. During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Thittanimuttam Krishnaswamy Seshachari was serving as the Senior Armament Officer of an Operational Wing. He took over control of Squadron Armament work in addition to his normal duties. It was largely due to him that the Squadron was able to achieve a high rate of success in the operational sorties. He reduced the turn-round time of aircraft to a considerable extent and by intelligent analysis reduced the bomb hang-ups to virtually zero. He made significant contributions towards armament modifications and trials for carriage and launching of special stores from aircraft and thus considerably improved the operational capability of the Bomber aircraft.

Throughout, Squadron Leader Thittanimuttam Krishnaswamy Seshachari displayed professional skill, organising ability and devotion to duty.

14. Squadron Leader SATWANT SINGH (5010) Flying (Pilot)

Squadron Leader Satwant Singh has been a Senior Flight Commander of a Fighter Squadron for nearly five years. During the entire period, he devoted himself selflessly and trained the pilots to ensure the operational readiness of the Squadron. During the operations against Pakistan in December, 1971, he led twenty Combat Air Patrol, sweep and escort missions setting an example to his pilots who put in their best efforts for the defence of the airfield.

Throughout, Squadron Leader Satwant Singh displayed professional skill, leadership and devotion to duty.

15. Squadron Leader AMRIT MOHAN MEHTA (5051) Flying (Pilot).

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Amrit Mohan Mehta was a Flight Commander of a Fighter Bomber Squadron. On the 4th December, 1971, he was detailed to carry out a photo reconnaissance mission over an Airfield. Immediately on completion of his mission, he was intercepted by two enemy Sabres, but he jettisoned his external loads, manoeuvred his aircraft and thus avoided attack by the enemy aircraft. A little later while on his way back to base, he was chased by two enemy Mirages but he again skillfully manoeuvred his aircraft and avoided interception. Though his aircraft had run short of fuel and the engine flamed out a few kilometers away from his base, he carried out a dead stick landing and thus saved the valuable aircraft. The photographs brought by him gave information about enemy airfield which were of immense value for further planning. In addition, he successfully led many strike missions, interdiction missions against enemy lines of communication and close air support missions.

Throughout, Squadron Leader Amrit Mohan Mehta displayed courage, professional skill and devotion to duty.

16. Squadron Leader NARINDER SINGH VERDI (5116) Flying (Pilot).

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Narinder Singh Verdi was serving as a senior pilot with a Fighter Squadron. On the 8th December, 1971, he went on a low level sweep mission as a number 3 in a four aircraft formation. After completion of the mission, as the formation was approaching the base, his aircraft was hit by a flock of three large birds and the aircraft including the engine was severely damaged. The wind-screen was smashed and the canopy was broken. He lost R/T contact and could see only the side of the cockpit. Despite the steady and progressive loss of engine thrust and the limited vision, he located the airfield and landed safely thus saving the valuable aircraft.

In this action, Squadron Leader Narinder Singh Verdi displayed courage, professional skill and devotion to duty.

17. Squadron Leader TEHMURASP RATANSHAW PATEL (5192) Flying (Pilot).

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Tehmurasp Ratanshaw Patel was serving with an operational Squadron in the Eastern Sector. On the 4th December, 1971, he was No. 3 of a strike mission over Dacca airfield. He had difficulty in raising the undercarriage of his aircraft and by the time he was able to raise it, he was separated from the formation. On his own, he attacked and caused heavy damage to a goods train and also fired at many enemy positions before returning to base. On subsequent days, he carried out a number of strike missions. On the 11th December, 1971, Squadron Leader Patel along with another pilot took off for an attack on enemy bunkers in Rangpur area. After knocking out the bunkers while pulling out of the dive, the aircraft was hit by ground fire. Both the pilots sustained extensive injuries. Squadron Leader Patel was hit by splinters near his eyes which caused severe pain and bleeding. Inspite of the injuries, he brought the aircraft back to base.

Throughout, Squadron Leader Tehmurasp Ratanshaw Patel displayed courage, professional flying skill and devotion to duty.

18. Squadron Leader UJJAL SINGH PRUTHI (5488) Medical

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Ujjal Singh Pruthi was serving as a surgical specialist in an Air Force Hospital in the Eastern Sector. It was entirely due to his foresight and planning that the hospital could meet all demands placed on it. With his professional knowledge and administrative ability, he stepped up the hospital to a high state of efficiency. As the battle casualties started pouring in, he single-handed carried out surgical operations for long periods. On one occasion, 41 casualties were attended to and emergency operations carried out in a period of 48 hours. On another occasion, when 22 casualties were brought in, he worked in the Operation Theatre for 36 hours at a stretch. The hospital treated 148 battle casualties during a period of ten days. As a result of prompt attention, all the cases were saved without losing a single life.

Throughout, Squadron Leader Ujjal Singh Pruthi displayed professional skill and devotion to duty.

19. Squadron Leader SHAILESH KUMAR (5520) Administrative

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Shailesh Kumar was serving as Section Operation Officer with a Signals Unit. He introduced new and original ideas and training schemes which led to considerable improvement in the working of the Air Defence system. The induction of a large number of operational units of various types during the operations required intelligent planning and meticulous coordination which he achieved with commendable efficiency. In addition, he was always concerned with the safe return and recovery of our offensive missions which saved a number of our aircraft under emergency conditions. On many occasions, he directed the successful interception of enemy aircraft by our fighters.

Throughout, Squadron Leader Shailesh Kumar displayed leadership, professional skill and devotion to duty.

20. Squadron Leader KRISHNASWAMY CHANDRA SHEKHAR (5670) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Krishnaswamy Chandra Shekhar was the Flight Commander of a Fighter Squadron. By sound planning, he ensured that all the Pilots of his Squadron were fully operational by day as well as by night. He carried out a number of Photographic missions deed into the enemy territory in unarmed aircraft and in heavily defended areas.

Throughout, Squadron Leader Krishnaswamy Chandra Shekhar displayed courage, leadership and devotion to duty.

21. Squadron Leader BILLORE SATYANARAYANA RAJU (5724) Administrative

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Billore Satyanarayana Raju was serving as Officer-in-Charge, Photo Section of an Operation Squadron. The photo section, under his personal supervision, produced over 50,000 prints of vital reconnaissance missions maintaining highest quality control. On the 13th December, 1971, aerial photographs were taken of all approaches to Dacca city, and six thousand two hundred prints with twenty enlargements were delivered the next morning. The information collected through these prints was of immense value to our ground forces in planning their operations.

Throughout, Squadron Leader Billore Satyanarayana Raju displayed leadership, professional skill and devotion to duty.

22. Squadron Leader AJAI KUMAR BRAHMAWAR (5858) Flying (Pilot).

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Ajai Kumar Brahmawar was serving with a Fighter Squadron. He was responsible for bringing the Squadron to a high state of operational readiness. He flew twenty-six operational missions in the form of combat air patrol, escort and interception. It was because of his personal example that the Squadron flew 55 to 60 sorties every day, irrespective of weather conditions, in pitch dark nights and at low altitude in the vicinity of hilly areas without any mishap.

Throughout, Squadron Leader Ajai Kumar Brahmawar displayed courage, professional skill, leadership and devotion to duty.

23. Squadron Leader BALJIT SINGH SAINI (6011) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Baljit Singh Saini was employed on Admin. duties at one of our airfields. On the 3rd December, 1971, when the runway of the airfield was damaged by enemy raids, he arranged for the repair of the runway in record time. The enemy attacked the airfield on a number of other occasions but he always ensured that the runway was repaired in record time by remaining with the labour.

Throughout, Squadron Leader Baljit Singh Saini displayed courage, leadership and devotion to duty.

24. Squadron Leader SAHAY SANJEEVA (6139) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Sahay Sanjeeva was serving as a senior pilot in a fighter Squadron. He flew twenty eight operational missions in the form of combat air patrol escort and interception irrespective of weather limitations, in pitch dark nights and at low altitudes in the vicinity of hilly areas. During his escort missions, he always ensured that the strike force was not threatened by enemy aircraft. On one occasion, while leading an escort mission of four aircraft, he spotted two enemy Mirage aircraft closing in on the formation from a very advantageous position. He immediately ordered his No. 2 to the correct position and manoeuvred his own aircraft in such a way that in one turn he started closing behind the enemy aircraft which surprised the enemy. The enemy aircraft, however, escaped after diving to the ground level. Instead of pursuing the enemy, he stayed with our strike force as otherwise our force would have been left without protection.

Throughout, Squadron Leader Sahay Sanjeeva displayed courage, leadership and professional skill.

25. Squadron Leader JATENDRA KUMAR DHAWAN (6279) Aeronautical Engineering (Mechanical).

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Jatendra Kumar Dhawan was serving as the Senior Armament Officer of an Operational Wing, which was assigned Heavy Bomber Commitment at a very short notice. Squadron Leader Jatendra Kumar Dhawan was responsible for receiving the stores and mounting armament on aircraft for the missions. He was responsible for getting the aircraft ready in time to react to the Pakistani strike on 3rd December, 1971. With complete disregard to this personal comfort, he worked round the clock and completed all the tasks assigned to him.

Throughout, Squadron Leader Jatendra Kumar Dhawan displayed professional skill and devotion to duty.

26. Squadron Leader DINKAR SHANTARAM JATAR (6521) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Dinkar Shantaram Jatar was attached to a Fighter Bomber Squadron. He carried out a large number of operational missions deep into enemy territory despite heavy ground fire and air opposition. On the 4th December, 1971, when his No. 2 was hit by ground fire and ejected deep inside enemy territory, he unmindful of his safety, remained in the area till he could confirm the safe ejection of his No. 2. On the 9th December, 1971, while attacking an airfield beyond hundred nautical miles in enemy territory, he ran short of fuel. Undeterred, he pressed home two attacks and brought the aircraft back to base with practically no fuel. On the 10th December, 1971, while on a close support mission, the left engine of his aircraft was cripped by enemy ground fire. Despite this handicap, he completed his mission and returned to base safely.

Throughout, Squadron Leader Dinkar Shantaram Jatar displayed courage, professional skill and devotion to duty.

27. Major Kuldip Singh Sawhney (IC-13279) Air Operational Pilot

Major Kuldip Singh Sawhney has been commanding an Air O.P. Flight in the forward area since 1969. During his tenure, he carried out 640 hours of accident free flying. At the time of the operations against Pakistan in December,

1971, practically all the pilots of his Flight had just been posted in and were under training for operational duties, and new type of aircraft without any modification for A.O.P. role had been allotted to the Flight. The Flight had to be divided into sections for attachment to Divisions. Major Kuldip Singh Sawhney faced an uphill task of training these pilots and converting the aircraft for operational role in a very short time in addition to exercising effective control over all the sections located at different places. He accomplished all these tasks in a very efficient manner. He himself carried out forty operational missions in Chhamb and Sialkot sectors under threat of enemy air and ground attacks.

Throughout, Major Kuldip Singh Sawhney displayed courage, leadership, devotion to duty and professional skill.

28. Flight Lieutenant Prashant Satyadeo Dikshit (7487) Flying (Navigator)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Prashant Satyadeo Dikshit was serving with a Bomber Squadron. He flew a number of operational reconnaissance missions covering vital targets like Chitagong, Cox Bazar, Sylhet and Dacca. On the 4th December, 1971, he volunteered for night mission over Sargodha and carried it out successfully.

Throughout, Flight Lieutenant Prashant Satyadeo Dikshit displayed courage, professional skill and devotion to duty.

29. Flight Lieutenant Harjit Singh Bedi (7603) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Harjit Singh Bedi flew twenty-six operational missions in the form of reconnaissance, emergency supply and casualty evacuation, from one of the forward airfields in the Rajasthan sector. He carried out these missions despite bombing and straffing of the areas by enemy aircraft. On the 14th December, 1971, while he was going to land at a Helipad in a forward area for evacuation of casualties, four enemy aircraft attacked in the vicinity. Despite these attacks, he landed his Helicopter in such a manner that the enemy aircraft could not spot it. He thus not only saved the Helicopter, but also remained with it and flew it back to base.

Throughout, Flight Lieutenant Harjit Singh Bedi displayed courage, professional skill and devotion to duty.

30. Flight Lieutenant Maneck Bomanshaw Madon (7681) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Maneck Bomanshaw Madon, as a senior pilot of a fighter Bomber Squadron, carried out several operational missions against enemy gun positions and troop concentrations in the Khem Karan Sector. On the 10th December, 1971, he was detailed to carry out Rocket Pod and Front Gun Missions along the Ichogil Canal. He located the well dug-in defensive positions of the enemy and carried out four attacks on them despite heavy ground fire. During these attacks, though his aircraft was hit on the wing resulting in fuel leakage and he faced control difficulty, he brought the damaged aircraft to the base.

Throughout, Flight Lieutenant Maneck Bomanshaw Madon displayed courage, professional skill and devotion to duty.

31. Flight Lieutenant Surinder Kumar Mitroo (7688) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Surinder Kumar Mitroo as a senior pilot of a Fighter Bomber Squadron, was detailed to lead an Interdiction mission. He located a target at Raiwind which was heavily defended. While attacking the target, his aircraft was hit by the enemy ground fire. The Rudder was jammed, partially offset to the right and the Hydraulic system suffered extensive damage. Besides, there was a two feet long tear in the rear fuselage which was badly distorted. Though experiencing partial loss of control, he skilfully brought the aircraft back to base using the emergency system to obtain a landing configuration and thus saved a valuable aircraft.

In this action, Flight Lieutenant Surinder Kumar Mitroo displayed courage and professional skill.

32. Flight Lieutenant Jagdish Bhattacharya (7739) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Jagdish Bhattacharya, as a pilot of a Fighter Bomber Squadron, carried out many operational missions. On the 6th December, 1971, while he was attacking the enemy near Munawar river, his aircraft was hit by enemy ground fire. As his aircraft was getting out of control, he ejected in the enemy territory. The enemy sent a detachment to capture him but in spite of spine injury, he evaded the enemy.

Throughout, Flight Lieutenant Jagdish Bhattacharya displayed courage and devotion to duty.

33. Flight Lieutenant Vijay Arora (7934) Aeronautical Engineering (Electronics)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Vijay Arora was serving with an operational Squadron in the Western Sector. He was a member of the crew who undertook two bombing missions to Changa Manga on the 3rd and 4th December, 1971, and one mission to Haji Pir Pass on the 5th December, 1971. On the mission to Haji Pir Pass, he rectified a serious defect to release system in utter disregard to his personal safety by opening the cargo door of the aircraft without a monkey belt.

In these actions, Flight Lieutenant Vijay Arora displayed courage, professional skill and devotion to duty.

34. Flight Lieutenant PALAMADAI SUNDARAM SUBRAMANIAN (7974)

Aeronautical Engineering (Mechanical)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Palamadai Sundaram Subramanian was serving as Engineering Officer of an Operational Squadron. He put the Repair and Servicing Section on a sound footing. Throughout the period of the operations, he worked incessantly and maintained a high serviceability rate. He thus made a significant contribution to the operational efficiency and achievements of the Squadron.

Throughout, Flight Lieutenant Palamadai Sundaram Subramanian displayed professional skill and devotion to duty.

35. Flight Lieutenant PRADIP KANTILAL GANDHI (8142)

Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Pradip Kantilal Gandhi was serving with a Fighter Squadron. He flew 11 sorties of offensive Air Support missions, 6 sorties of counter Air Operations and 3 sorties of Air Defence missions. Out of these he led 9 missions. In offensive support missions, he carried out four strikes at Brigade Headquarters at Jamalpur, of which two were led by him. He carried out boming attacks on Lal-Mai Army position and destroyed four bunkers. In counter Air operations, he carried out 3 sorties of day and 2 sorties of night bombing over Tezgaon and Kurmitola airfields which were heavily defended by Anti-aircraft artillery. He was the first person to carry out night bombing sorties in the type of fighter aircraft he was flying. He carried out two strikes on the troop concentrations in Dacca and destroyed the target despite heavy ground fire.

Throughout, Flight Lieutenant Pradip Kantilal Gandhi displayed courage, leadership, professional skill and devotion to duty.

36. Fight Lieutenant SUBBIAH BALASUNDARAM (8274)

Aeronautical Engineering (Mechanical)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Subbiah Balasundaram flew a number of bombing missions in the Western Sector. On the 4th December, 1971, while on a low level bombing mission over Changa Manga, the last lashing of the bomb conveyers failed to open up. He opened up the jack holding the last lashing single-handed and dropped the bombs on the target. On the 14th December, 1971 while on a bombing mission over Rohri Marshalling yard, at the moment of drop the release units failed to function electrically and manually. While his aircraft was being subjected to heavy ground fire, he opened up the jacks of the release mechanism and enabled the load to be dropped over the target. On the 17th December, 1971,

while on a bombing mission at a higher altitude over an airfield while unlashing the bombs one of the cables malfunctioned. Though the portable oxygen bottle, he carried, was exhausted, he managed to unlash the bombs making use of the emergency axe.

Throughout, Flight Lieutenant Subbiah Balasundaram displayed courage, professional skill and devotion to duty.

37. Flight Lieutenant CHARAN SINGH DHILLON (8376)

Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Charan Singh Dhillon was one of the senior pilots of a Fighter Bomber Squadron. On the 4th December, 1971, he carried out a deep day penetration mission to an enemy airfield and destroyed a P.O.L. and Ammunition Dump, despite aerial engagement and heavy ground fire. While returning from his mission, he was engaged by an enemy aircraft in close combat and though he was extremely short of fuel, yet he successfully disengaged his aircraft. Later, when about 10 miles away from the base, his engine flamed out, he successfully forcelanded at the base and saved the valuable aircraft.

In this action, Flight Lieutenant Charan Singh Dhillon displayed courage and professional skill.

38. Flight Lieutenant SHRIDHAR MADHAV GHATATE (8665)

Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Shridhar Madhav Ghatate as a Senior Pilot of a Fighter Bomber Squadron, flew twelve operational missions, and destroyed two enemy tanks and a number of vehicles. On two occasions, when his aircraft was hit by ground fire, he brought his aircraft back to base with almost no fuel and thus saved two operational aircraft. He set an example to the Pilots by his courage in hitting the enemy positions despite heavy ground fire and by pressing home attacks in complete disregard to his personal safety.

Throughout, Flight Lieutenant Shridhar Madhav Ghatate displayed courage, professional skill and devotion to duty.

39. Flight Lieutenant NAYANATHARA KUNJAN PILLAI RAGHAVA MENON (8766)

Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Nayanathara Kunjan Pillai Raghava Menon was attached to a Fighter Bomber Squadron. He flew a number of operational missions deep inside enemy territory despite heavy ground and air opposition. On the 16th December, 1971, while on a bombing and straffing mission, his aircraft was hit by anti-aircraft fire. The shell shattered the canopy and fragments of the shell got embedded in his body injuring him seriously and hampering his vision. Though he was more than seventy nautical miles away from his base, he brought the aircraft back to base safely instead of abondoning it.

Throughout, Flight Lieutenant Nayanathara Kunjan Pillai Raghava Menon displayed courage, determination and professional skill.

40. Flight Lieutenant MOHANKUMAR PRABHAKAR SAMANT (9061)

Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Mohankumar Prabhakar Samant as a pilot in a Fighter Bomber Squadron, carried out a number of operational missions deep inside enemy territory despite heavy ground fire and air oppositions. He took aerial photographs of Sargodha airfield which was heavily defended and brought back information of immense value to the Army and the Air Force for further planning. On the 6th December, 1971, he carried out two interdiction missions over Lalla Musa marshalling yard and destroyed a railway engine and ten bogies of a goods train carrying military stores and thus prevented the enemy in getting the supply of ammunition. During one of these missions, he cut off the lines of communication of the enemy. On the 8th and 9th December, 1971, he led two successful strike missions over Chander and Walton airfields and caused extensive damage to the runway and the dispersal area. He also photographed the entire Ichogil Canal and the Chhamb area west of river Tawi and brought back photographs of great operational value.

Throughout, Flight Lieutenant Mohankumar Prabhakar Samant displayed courage, professional skill and devotion to duty.

41. Flight Lieutenant PRAKASH NATH SHARMA (9412)

Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Prakash Nath Sharma as a pilot of a Helicopter Unit, operated from forward helipads in support of our ground forces. He flew fifty missions deep inside enemy territory carrying food, water and ammunition for our ground forces in Nayachor, Chhachor and Khinsar areas and bringing back battle casualties. Sometimes, he had to land at completely unprepared desert surface, well within the range of enemy fire. On the 11th December, 1971, while returning from a mission, he was attacked by four enemy aircraft about six miles from Nayachor. He immediately landed his helicopter between two sand-dunes and ordered his crew to take cover under the thick dust raised up by the rotor. The enemy aircraft straffed the helicopter and the crew and one of the aircraft dropped a 500 lbs bomb also, but their attacks failed to find the mark. The only damage caused was that the perspex of the Helicopter got shattered and the reductor bay cowling was blown apart. Undeterred, he took off again and landed at a forward helipad and thus not only saved the helicopter but also the lives of the crew members.

Throughout, Flight Lieutenant Prakash Nath Sharma displayed courage, professional skill and devotion to duty.

42. Flight Lieutenant RAVINDRA VIKRAM SINGH (9524) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Ravindra Vikram Singh was Flight Commander of a Helicopter Unit. He undertook hazardous tasks over difficult terrain. He moulded his team into a highly organised and effective force, capable of giving their best at all times. On the 16th December, 1971, while on a mission to Sylhet, his aircraft which was flying at a height of one kilometre was hit by enemy ground fire and one of the bullets after piercing the cabin, hit an oil pipe, thus resulting in leakage of hot oil into the cabin. He pulled up the aircraft immediately to 1.5 km. of height and by this time the reductor oil pressure had started dropping rapidly. It was by then dark and returning to base or to any other airfield was impossible. He, however, brought the aircraft out of enemy area, selected a suitable field at Fenchugari after approximately 15 minutes flying under trying circumstances in complete darkness and made a successful landing and thus saved the aircraft and the lives of the passengers and crew. Earlier on the 8th December, 1971, he brought the aircraft back safely when it was hit just six inches behind the co-pilot seat, twice on main rotor blades and once on main gear box cowling by enemy ground fire.

Throughout, Flight Lieutenant Ravindra Vikram Singh displayed courage, professional skill and devotion to duty.

43. Flight Lieutenant Rudra Krishna Bishnoi (9533) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December ,1971, Flight Lieutenant Rudra Krishna Bishnoi was serving with a Transport Squadron in the Eastern Sector. On the 10th December, 1971, he was detailed to undertake a supply dropping mission in support of our forward troops at Sylhet. He took off with full load of ammunition and on arriving over the target faced heavy ground fire. In spite of intense firing from the ground he continued his drop run and delivered the urgently required ammunition to the troops. During the process of drop, his port fuel tank was hit by ground fire in three places and fuel was streaming out and the engine was spluttering. He controlled the crippled aircraft, feathered the engine and carried out a safe single engine landing at a forward base. This emergency drop enabled our troops to overcome the enemy opposition and gain vital advantage. On previous nights, he had undertaken three bombing missions in an unarmed transport aircraft over enemy airfields.

Throughout, Flight Lieutenant Rudra Krishna Bishnoi displayed courage, professional skill and devotion to duty.

44. Flight Lieutenant Philip George (9603)
Aeronautical Engineering (Mechanical)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Philip George was serving as Engineering Officer of a Squadron. Throughout the operations, the Unit maintained 100% serviceability. All the aircraft of the Unit operated from various airfields during day and night on operational reconnaissance missions. This achievement was largely due to untiring efforts of Flight Lieutenant Philip George. His qualities of leadership inspired his men to work cheerfully round the clock.

Throughout, Flight Lieutenant Philip George displayed leadership, professional skill and devotion to duty.

45. Flight Lieutenant Konerirajapuram Srinivasan Raghavachari (9743), Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Konerirajapuram Srinivasan Raghavachari served with an operational Squadron in the Eastern Sector. He undertook a number of strike missions. His aircraft was hit on a number of occasions but he safely brought it back to base every time. Undaunted by heavy enemy ground fire, he pursued his missions and pressed home the attacks. He was responsible for destruction of enemy positions which included runways, bunkers, gun positions and troop concentrations.

Throughout, Flight Lieutenant Konerirajapuram Srinivasan Raghavachari displayed courage, professional skill and devotion to duty.

46. Flight Lieutenant Kuldip Singh Bajwa (9757)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Kuldip Singh Bajwa was serving with an operational Squadron in the Eastern Sector. On the 4th December, 1971, he was No. 4 of the formation which attacked a heavily defended airfield. Short of the target, he was the first pilot who noticed that his formation had been attacked by three Sabres. He immediately took appropriate steps and saved the threatened aircraft. In a subsequent strike on Tezgaon on the same day where he was No. 2 in a two aircraft formation, he found his leader being attacked by a Sabre. He again exercised effective control and informed his leader to execute a timely Break. At this stage he was fired upon by the enemy. His aircraft was damaged and it went out of control close to the ground. Rather than abandoning the aircraft over enemy territory he brought his aircraft under control, a few feet off the ground and decided to make an attempt to take the aircraft to base. He flew the damaged aircraft over a distance of 150 nautical miles and landed it safely at the base. Subsequently, he executed several highly effective missions in the face of heavy ground fire. He attacked and damaged a number of enemy ammunition dumps, many gun positions, tanks, ferry boats, trains, bunkers, buildings and effectively strafed enemy concentration areas.

Throughout, Flight Lieutenant Kuldip Singh Bajwa displayed courage, professional skill and devotion to duty.

47. Flight Lieutenant Ramesh Thakurdas Chandani (9797)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Ramesh Thakurdas Chandani carried out twenty-six sorties in JAMMU AND KASHMIR Sector. On the 14th December, 1971, when he was returning from Nainakot, his co-pilot drew his attention to one of our aircraft which had been shot down and was on fire. He immediately landed near the wreckage and rescued an Army Officer who was the only living occupant of the aircraft and thus saved his life.

Throughout, Flight Lieutenant Ramesh Thakurdas Chandani displayed courage, professional skill and devotion to duty.

48. Flight Lieutenant Kalyan Brata Bagchi (9987)
Administrative

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Kalyan Brata Bagchi was serving as an Interception Director in the Eastern Sector. On the 22nd November, 1971, Flight Lieutenant Bagchi observed on his radar scope one single blot close to Jessore heading towards our border. He scrambled four Gnats from Dum Dum, within half a minute. He positioned his fighters with precision and achieved such a tactical advantage that the moment the Pakistan Air Force intruders entered the Indian territory at Boyra, our fighters were ready to engage them. Flight Lieutenant Bagchi continued to give direction to pilots and this resulted in shooting down of three Pakistani Air Force Sabre Jets and capture of two pilots.

In this action, Flight Lieutenant Kalyan Brata Bagchi displayed professional skill and devotion to duty.

49. Flight Lieutenant JAGJIT SINGH GHUMAN (10123)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Jagjit Singh Ghuman as a pilot of a Fighter Bomber Squadron, flew fourteen missions in support of our ground forces and destroyed two tanks, three vehicles and one enemy gun position. He also successfully attacked Sulemanki Head Works which was heavily defended. The destruction of this target was of paramount importance to halt the enemy Armour. He also bombed enemy concentration of troops over Dharama Village, Norowal Railway Yard and enemy troops and tank concentration in village Mehlwanni Zaffarwal area.

Throughout, Flight Lieutenant Jagjit Singh Ghuman displayed courage, professional skill and devotion to duty.

50. Flight Lieutenant JOGINDER PAL (10355)
Aeronautical Engineering (Mechanical)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Joginder Pal worked single-handed and round the clock, supervising rectification, loading and unloading of armament stores, changes of configuration and was generally in charge of the armament operations. The fact, that the Squadron dropped over 4,00,000 lbs. of bomb load and a variety of other miscellaneous stores, within a period of a fortnight, is a tribute to his hard work and dedication to duty.

Throughout, Flight Lieutenant Joginder Pal displayed professional skill and devotion to duty.

51. Flight Lieutenant PERMINDER JIT SINGH SIDHU (10488), Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Perminder Jit Singh Sidhu was serving as a pilot with a Fighter Bomber Squadron. He flew a number of operational missions deep inside enemy territory in the Eastern as well as Western Sectors. In the Eastern Sector, while flying as a wing man on a mission to Gaibanda ferry, he damaged the ferry and a number of steamships. Later, he carried out offensive missions and destroyed trains and marshalling yards in Rangpur-Bogra Sector. In the Western Sector, he led an offensive mission in the Siddinya Canal area and caused heavy damage to the bridges across the canal and enemy bunkers. All these missions were carried out in the face of heavy enemy ground fire and air opposition.

Throughout, Flight Lieutenant Perminder Jit Singh Sidhu displayed courage, professional skill and devotion to duty.

52. Captain LAKSHMINARAYAN PADMANABHAN (IC-13640). Air Op. Pilot.

Captain Lakshminarayan Padmanabhan has been serving as a Pilot in our Air Op Flight since December, 1969. During the operations against Pakistan in December, 1971, he was operating in the Chhamb Sector. In this Sector the enemy had heavily concentrated his armour and guns and the Sector was his main axis. Between 6th and 7th December, 1971 Captain Padmanabhan carried out a total of 31 Operational Sorties in the face of heavy ground opposition. He successfully directed the fire of our own Artillery guns and was instrumental in the destruction of several enemy tanks, guns and vehicular convoys.

Throughout, Captain Lakshminarayan Padmanabhan displayed courage, professional skill and devotion to duty.

53. Flying Officer GEY DARSHA BAMBOAT (12025)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flying Officer Gey Darsha Bamboat was serving with an operational Squadron in the Western Sector. He flew a number of operational sorties. On one such sortie he was attacked by four Mig-19 aircraft of the enemy. In the engagement, his aircraft was hit and the drop tank was damaged. Though he was short of fuel, he brought the aircraft back safely. On the 4th December, 1971, while carrying out search and strike mission in the Chhamb Sector, the enemy Ack Ack hit and damaged his aircrafts hydraulic system but he brought the aircraft back to base.

Throughout, Flying Officer Gey Darsha Bamboat displayed courage, professional skill and devotion to duty.

54. Pilot Officer DALJEET SINGH SHAHEED (12387) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Pilot Officer Daljeet Singh Shaheed was attached to a Brigade in the Eastern Sector for duties as a Forward Air Controller in the Air Contact Team of the Brigade. On the 4th December, 1971, he directed air strike under heavy enemy artillery and small arms fire at Akhaura. Inspite of the enemy engaging his position, he continued to direct air strikes for a period of two hours. The air strikes were so accurate and effective that they inflicted heavy damage on the enemy, demoralised him and silenced his fire. Later, in the outskirt of Dacca, along river Lakhya, he took up his position at a vantage point and directed effective air strikes on enemy targets. Although he suffered an attack of Asthma on the 13th December, 1971, he continued to carry out his duties as a Forward Air Controller until the Pakistani occupation forces surrendered.

Throughout, Pilot Officer Daljeet Singh Shaheed displayed courage, professional skill and devotion to duty.

55. 18086 Warrant Officer GURDAS RAM DIXIT Fitter-I.

During the operations against Pakistan in December, 1971, Warrant Officer Gurdas Ram Dixit was serving as Warrant Officer-in-Charge Station Workshop at a forward airfield in the Western Sector. He was responsible for the repair, servicing and rectification of various defects of the technical equipment. He ensured quick servicing of all ground equipment for aircraft and the patch repairs of the damaged aircraft.

Throughout, Warrant Officer Gurdas Ram Dixit displayed professional skill and devotion to duty.

56. 200582 Flight Sergeant PARAMESHWARAN DORAISWAMY, Electrician-I.

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Sergeant Parameshwaran Doraiswamy was posted as Senior Non-Commissioned Officer-in-Charge of airfield lighting at a forward airfield in the Western Sector. He was responsible for keeping serviceable all electrical facilities for flying such a runway lighting, crash barriers, air raid alarms and light communication systems vital for operations. He successfully completed all the tasks assigned to him in the face of air attacks.

Throughout, Flight Sergeant Parameshwaran Doraiswamy displayed courage, professional skill and devotion to duty.

57. 217249 Sergeant RATHINASABAPATHY KANNIAH Air Signaller.

During the operations against Pakistan in December, 1971, Sergeant Rathinasabapathy Kanniah served with the Air Delivery Flight that airlifted vitally needed spares from different equipment depots to forward air bases. Inspite of the fact that he had to fly for long hours daily most of the time landing late at night, he was always cheerful and was a source of inspiration to the other crew members. It was largely due to him that the tasks assigned to the Air Delivery Flight were successfully completed.

Throughout, Sergeant Rathinasabapathy Kanniah displayed courage, professional skill and devotion to duty.

58. 220331 Sergeant SOHAN LAL PAL Fitter Armourer.

During the operations against Pakistan in December, 1971, Sergeant Sohan Lal Pal was serving with an operational Squadron in the Western Sector. On the 3rd December, 1971, at 23.30 hours, he was supervising the leading of the Squadron aircraft in the dispersal area. There was a bombing raid at that time and several bombs were dropped near the dispersal area. He encouraged his men and continued to work on the aircraft. During this period, a bomb exploded very near the dispersal area. He continued working calmly and the men, seeing his example carried on undisturbed. He thus ensured that the full complement of the aircraft was available for the operational missions.

In this action Sergeant Sohan Lal Pal displayed courage, leadership, professional skill and devotion to duty.

59. 228889 Sergeant SATISH KUMAR SONI Electrician-I

During the operations against Pakistan in December, 1971, Sergeant Satish Kumar Soni was serving with an operational Squadron in the Eastern Sector. He was airlifted to Tezpur and Gauhati for servicing of aircraft needed for urgent reconnaissance commitments. On both the occasions he, by working day and night, serviced the aircraft at these locations, and thus enabled all the aircraft to complete the missions successfully.

Throughout, Sergeant Satish Kumar Soni displayed courage, professional skill and devotion to duty.

60. 234022 Sergeant PACHEERI SIVASANKARAN Electrician-I

During the operations against Pakistan in December, 1971, Sergeant Pacheeri Sivasankaran was serving as the Senior Non-Commissioned Officer incharge of servicing party in a Fighter Bomber Squadron. On the 6th December, 1971, at about 17.00 hours, when one of the aircraft had landed and switched off at the entrance of a blast pen, the airfield was attacked by enemy aircraft. Unmindful of his safety, he, with the help of some airmen, pushed the aircraft into the blast pen and thus saved a valuable aircraft. On the 7th December, 1971, when a pilot was strapped in the cockpit ready to take off, the air raid siren was sounded. In complete disregard to his safety, Sergeant Pacheeri Sivasankaran ensured that the aircraft started and taxied out.

In these actions, Sergeant Pacheeri Sivasankaran displayed courage and devotion to duty.

No. 109-*Pres.*/72.—The President is pleased to approve the award of the *Bar* to "Vayu Sena Medal"/"Air Force Medal" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage during the recent operations against Pakistan :—

1. Wing Commander VIJAY CHAND MANKOTIA (4041), VM Fly (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Wing Commander Vijay Chand Mankotia was the Station Commander of a Transport Base. He provided such remarkable facilities at his Base that the fighter operations during the conflict went through with exceptional smoothness and success. He ensured that all the needs of the fighter force, both administrative and operational, were fully met. In addition, he converted a transport aircraft for operations in bombing role. This employment of a transport aircraft, the first mission of which he himself led, played an important part in the harassment role over enemy airfields at night and in the strike role over defended targets by day.

Throughout, Wing Commander Vijay Chand Mankotia displayed courage, professional skill and devotion to duty.

2. Squadron Leader TREVOR JOSEPH FERNANDEZ, (5287), VM Flying (Pilot).

During the operations against Pakistan in December, 1971 Squadron Leader Trevor Joseph Fernandez was the Flight Commander of a Fighter Bomber Squadron. He flew fourteen operations missions in support of our ground forces and was responsible for the destruction of one tank, four vehicles and one enemy gun position He successfully attacked the Sulemanki Head Works scoring direct bomb hits which contributed significantly in halting the enemy Armour. In addition, he also successfully bombed Zaffarwal and Norowal Railway yards and attacked the Radar Unit at Walton.

Throughout, Squadron Leader Trevor Joseph Fernandez displayed courage, professional skill and devotion to duty.

3. 400372 Warrant Officer RANGAPPA RANGASWAMY, VM Flight Gunner/Fitter Armourer

During the operations against Pakistan in December, 1971, Warrant Officer Rangappa Rangaswamy, was serving as a Flight Gunner with a Transport Squadron. He undertook a number of bombing missions. During a night bombing mission on the 3rd December, 1971, his aircraft encountered intense and heavy ground fire. The aircraft sustained a number of direct hits and bullets passed through the gunner's cabin. He, however, effectively suppressed the ground fire, by engaging with his guns and inflicting casualties on the enemy. Unmindful of his personal safety, he performed his duties on all missions with a high sense of devotion to duty and courage.

Throughout, Warrant Officer Rangappa Rangaswamy displayed courage, professional skill and devotion to duty.

No. 110-*Pres.*/72.—The President has been pleased to give orders for publication in the Gazette of India of the name of Lieutenant Shanti Prasad Vyas (X) mentioned in the despatches received by the Defence Minister from the Chief of the Naval Staff in connection with the operations against Pakistan in December, 1971.

No. 111-*Pres.*/72.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officers of the Tamil Nadu Fire Service :—

Names and Ranks of the Officers

Shri Muthia Rathinam,
Fireman No. 2094,
Madurai Fire Station,
District Madurai,
Tamil Nadu.

Shri Alagarswamy Chinniah,
Fireman No. 1833,
Madurai Fire Station,
District Madurai,
Tamil Nadu.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 17th December, 1971 as a result of incessant rains river Vaigai was in spate. The Fire Service personnel of Tallakulam and Madurai Fire Stations were requisitioned for rescue work on both sides of the river. Shri Muthia Rathinam and Shri Alagarswamy Chinniah of Madurai Fire Station were engaged in the rescue operations at the Southern side of the Railway Bridge at Thathaneri where five persons were seen marooned on a bund in the river at a distance of 30 feet from the bank. Shri Rathinam and Shri Chinniah swam across the swift current and rescued three out of the five persons. While attempting to rescue the remaining two marooned persons, both Shri Muthia Rathinam and Shri Alagarswamy Chinniah were washed away by the floods. They caught hold of a floating uprooted coconut tree and went along with the stream but on account of a whirlpool they were thrown into the flood waters again. Shri Rathinam was carried away further down the river to Yanaikkal Causeway and from there to the Victor Bridge where he reached a small mandapam. He got upon the mandapam but found five persons sitting there waiting to be rescued. Even though he had suffered multiple injuries all over his body and was completely exhausted, he placed two women on a float thrown by the rescue party for the rescue of the marooned persons. Later, he carefully balanced these women on the float. When Shri Rathinam was guiding the float he was again washed away. He struggled in the rough waters and with great difficulty reached the shore in a completely exhausted condition. Shri Chinniah, on the other hand, after being washed away in the river, reached a mandapam in the middle of the river where he remained without food and rest for 24 hours.

Shri Muthia Rathinam, Fireman, and Shri Alagarswamy Chinniah, Fireman, exhibited conspicuous courage and presence of mind in saving marooned persons in utter disregard of their personal safety.

2. These awards are made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carry with them the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 17th December, 1971.

No. 112-*Pres.*/72.—The President is pleased to award the President's Police and Fire Services Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Tamil Nadu Fire Service :—

Name and Rank of the Officer

Shri Thiruvarasu Kulandaivelu, (*Deceased*)
Leading Fireman No. 1410,
Tallakulam Fire Station,
District Madurai,
Tamil Nadu.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 17th December, 1971, as a result of incessant rains, floods were caused in river Vaigai in Madurai District. A number of persons who had put up huts in the river bed were marooned in the middle of the river. The services of a helicopter were requisitioned by the Collector of Madurai to rescue the marooned persons. Shri Thiruvarasu Kulandaivelu volunteered to accompany the Collector of Madurai in the helicopter for rescue work. While making an aerial survey in and around Ramaroyar Mandapam area, some persons were seen perching at the top of a mandapam and clinging to it in a precarious condition in the middle of the river at a distance of 300 feet from the bank. The flood water was rising all the while and the submersion of the mandapam was imminent. Shri Kulandaivelu rescued two of the marooned persons from the helicopter and brought them ashore in the helicopter. After leaving the Collector on the shore Shri Kulandaivelu made further trips in the helicopter and rescued five more marooned persons. After making four trips and having rescued seven persons, he made another trip to save a woman who had not been able to respond to the rescue attempts earlier because of nervousness. Shri Kulandaivelu approached the spot as near as possible to save the woman but the helicopter accidentally touched the swelling flood water which gushed into its engine as a result thereof the engine of the helicopter burst and the helicopter plunged into the flood waters. The pilot of the helicopter swam across the river but Shri Kulandaivelu could not perhaps release the belt around him and was caught inside the helicopter and drowned in the flood waters of the river. His body was recovered from within the broken helicopter next day at a distance of a furlong.

Shri Thiruvarasu Kulandaivelu displayed conspicuous courage and devotion to duty in saving the life of marooned persons and sacrificed his own life in the discharge of his duties.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the President's Police and Fire Services Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 17th December, 1971.

NAGENDRA SINGH, Secy. to the President.

CABINET SECRETARIAT

(Department of Personnel)

New Delhi-1, *the* 21*st September* 1972

CORRIGENDUM

No. 5/30/72-*CS*(*I*).—In the Rules for the limited departmental competitive examination for inclusion in the Select List for the Section Officers' Grade of the Central Secretariat Service to be held by the Union Public Service Commission in 1973, published in the Gazette of India dated the 1st July, 1972, the following corrections shall be carried out :—

(1) In page 719, Col. 2 below Rule 4(1), the item occurring below item (i) may be read as item (ii).

(2) In page 719, Col. 2 in Rule 4(2)(c), item (ii) the word 'has' may be read as 'had'.

(3) In page 721, Col. 1, in para 2, line-1, of Appendix, the words 'Prat I' may be read as 'Part I'.

(4) In page 721, Col. 1 in line 1 below (1) Noting and Drafting, Precis Writing', of Schedule, the word 'question' may be read as 'questions'.

M. K. VASUDEVAN, Under Secy.

MINISTRY OF STEEL AND MINES

New Delhi-11, *the* *September* 1972

RESOLUTION

No. DUR-18(5)/72.—Reference is invited to this Ministry's Resolution No. DUR-18(5)/72, dated the 1st August, 1972, constituting a Technical Committee to investigate the reasons for high arising of defectives, rejects and scrap in the Rolling Mills in the Steel Plants and to suggest measures to remedy this situation.

2. The Committee was required to submit its report to the Government by the end of September, 1972. It has been represented by the Chairman of the Committee that it will not be possible for the Committee to submit the report by this date as he would be out of India on official duty till

about the middle of October, 1972. In the circumstances, it has been decided that the Committee may be allowed to submit its report by the end of November, 1972.

ORDER

ORDERED that this may be published in the Gazette of India for general information.

K. V. RAMANATHAN, Jt. Secy.

MINISTRY OF AGRICULTURE

(Department of Agriculture)

New Delhi, the 22nd August 1972

RESOLUTION

No. 7-6/72-*Econ.Py.*—The Government of India hereby appoints Shri Mohan Singh, Member, Rajya Sabha, as a member of the Panel of Farmers, reconstituted *vide* Resolution No. 6-26/69-Econ.Py., dated the 3rd April, 1972, *vice* Shri N. S. Brar, former Member, Rajya Sabha.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all Ministries and Departments of the Government of India, the State and Union Territory Administrations, Planning Commission, Prime Minister's Secretariat, President's Secretariat, Lok Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, Comptroller and Auditor General of India, all Members of the Panel of Economists, Panel of Agricultural Scientists and All Attached and Subordinate Offices of the Ministry of Agriculture (Department of Agriculture).

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

Q. M. AHMAD, Jt. Secy.

MINISTRY OF EDUCATION & SOCIAL WELFARE

New Delhi, the 15th September 1972

No. F.1-2/72*YS*-1(2).—In pursuance of para 2(v) & (vi) of the Ministry of Education and Social Welfare Resolution No. F.1-2/72YS-1(2), dated the 13th April, 1972, as subsequently amended *vide* No. F.1-2/72-YS-1(2), dated the 22nd June 1972, the following Members of Parliament are nominated on the All India Council of Sports, with immediate effect for a term ending 12th April, 1975.

Lok Sabha

1. Shri Indrajit Gupta.
2. Shri Zulfiquar Ali Khan.
3. Shri G. Vankatswamy.
4. Shri Vayalar Ravi.

Rajya Sabha

1. Shri Vithal Gadgil.
2. Shri K. P. Singh Deo.

No. F.1-2/72*YS*-1(2).—Shri M. N. Kapoor, Member, All India Council of Sports, is hereby nominated on the Executive Committee of the Council, constituted *vide* Para 2 of this Ministry's Notification No. F.1-2/72YS-1(2), dated the 2nd May, 1972, for a period of one year with effect from 1st May, 1972.

KANTI CHAUDHURI, Jt. Secy.

MINISTRY OF IRRIGATION AND POWER

New Delhi, the 19th September 1972

RESOLUTION

No. 14/6/72-*WD.*—Reference this Ministry's Resolution No. 14/7/72-WD, dated the 12th June 1972 regarding constitution of the Fact Finding Committee on Cauvery. The date for submission of the Report by the Committee is hereby extended upto the end of 15th December, 1972.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to the Governments of Tamil Nadu, Mysore and Kerala, the President's Secretariat, the Prime Minister's Secretariat, the Planning Commission and the Ministry of Finance.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India.

S. N. GUPTA, Jt. Secy.

New Delhi, the 20th September 1972

RESOLUTION

No. EL-II-1(3)72.—In pursuance of the decision taken at the Third meeting of the Central Electricity Consultative Council held on the 5th August, 1972 at New Delhi, the following Committee has been appointed to examine the difficulties faced by the Agriculturists and other consumers in the rural areas in the matter of electric power supply and to suggest remedial measures :—

Chairman

1. Shri B. N. Kureel, Deputy Minister for Irrigation and Power.

Members

2. Shri R. K. Goswami, Minister of State for Power, Uttar Pradesh, Lucknow.
3. Shri Mohammed Idris, Minister for Industries & Power, Assam, Shillong.
4. Dr. J. N. Misra, Minister for Cooperatives & Electricity, Bihar, Patna.
5. Shri Brajamohan Mohanty, Minister for Irrigation & Power, Orissa, Bhubaneswar.
6. Shri P. Venkatasubbiah, Member of Parliament (L.S.).
7. Shri Kondaji Basappa, Member of Parliament (L.S.).
8. Shri B. S. Bhaura, Member of Parliament (L.S.).
9. Shri P. S. Patil, Member of Parliament, (Rajya Sabha).

Member-Secretary

10. Shri N. Venkatesan, Member (U), CW&PC (PW).

2. The Committee will submit its report within a period of six months.

ORDER

ORDERED that copies of the Resolution be sent to all the State Governments, Union Territories and State Electricity Boards for giving wide publicity.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India.

S. N. VINZE, Jt. Secy.

New Delhi, the 21st September 1972

RESOLUTION

No. EL.I-32(54)/70.—For sometime past there have been frequent breakdowns of many generating units at a number of places resulting in failure of power supply to vital sectors of economy. It has been decided by the Government of India to constitute two Groups of Experts—one for thermal and the other for hydro power stations—till March, 1974 in the first instance. They will inspect the power stations in the country in association with the Chief Engineers of the respective State Electricity Boards/Electricity Departments and make periodical reports in regard to the performance of the generating plants and recommend measures to improve the operation and maintenance. The Groups shall consist of the following :—

I—*Thermal Group*

1. Shri K. R. Radhakrishnan, Retired Chairman, Tamil Nadu State Electricity Board, Madras.
2. Shri C. Laxmipathy, Retired Chief Engineer, Andhra Pradesh State Electricity Board, Hyderabad.
3. Shri L. J. Sane, Retired Chief Engineer, Madhya Pradesh Electricity Board, Jabalpur.

II—*Hydro Group*

1. Shri K. L. Vij, Retired Vice Chairman, Central Water and Power Commission, New Delhi.
2. Shri G. S. Gyani, Retired Member, Bhakra Management Board.
3. Shri V. Ganapathy, Retired Technical Member, Kerala State Electricity Board, Trivandrum.

ORDER

ORDERED that the copies of the Resolution to be sent to all the State Governments (Electricity Departments)/Union Territories (Electricity Departments)/State Electricity Boards.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India.

B. P. PATEL, Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE MANAGER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1972